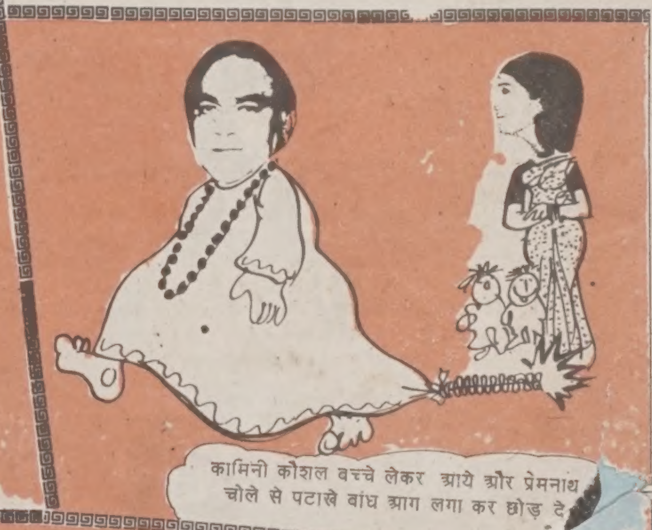
फिल्मी सितारे दीवाली ऐसे मनायें

काश फिल्मी सितारे हमारे बताये ढंग से दीवाली मनाते तो उनकी दीवाली का हाल पत्रिकाओं में पाठकों का भी मनोरंजन होता। फिर भी आप हमारं योजना तो जान ही सकते हैं।










हे मां, कृपा कर!
संजीव लक्ष्मी जी की जगह हेमा की पूजा करे।
अमिताभ फुलझड़ी जला रहा हो और अनजा
जया के सिर पर अंगारे गिर रहे
बनिये दीवाली को नये वही खाते खोलते हैं। राखी शादी की नई नं० ३ फोटो एलबम खोले। पहली दो शादियों के एलबम पुराने पड़ गये हैं। अब नये एलबम के लिये उसे सामान जुटाना चाहिये अर्थात नया रोमांस शुरू करे।
सारिका सचिन को मिठाई का पैकेट भेजे और सचिन
के आदमी के सामने ही सारी मिठाई अपने कुत्ते को ड
शशि कपूर जीनत अमान की देख-रेख में फुलझड़ी चलाये ताकि हाथ न जल जाये।
ऋषि कपूर नीतू के साथ कुर्सी पर बैठा हो और राज कपूर उनकी कुर्सी के नीचे चुपके से पटाखा छोड़े।



रेखा अपने सब पुरुष मित्रों को मिठाई के डिब्बों के स्थान पर शिलाजीत, विटामिन और शाही तिला के पैकेट दीवाली उपहार भेजें।
डैनी अनार चला रहा हो, परवीन बाबी आकर अनार से अपनी सिगरेट सुलगाये और बगैर डैनी से बात किये या उसकी ओर देखे चली जाये अपने रास्ते।
धर्मेन्द्र की बीवी प्रकाश छत पर रॉकेट चलाये और रॉकेट सीधे हेमा मालिनी के बैडरूम में खिड़की के रास्ते घुस आग लगा दे। (धर्मेन्द्र व हेमा के घर आमने-सामने हैं)।
दत्त विला
राजकपूर नर्गिस के बच्चों के लिये पटाखे लेकर जाये और सुनील दत्त उसे गेट पर से ही वापिस कर दे।
सुनील दत्त डाकू भेष में ही दीवाली मनाये। हां कारतूसों की माला के स्थान पर पटाखों की लड़ी लगाये और हाथमेंबन्दूक की जगह रॉकेट हो।
रीना राय दीवाली का प्रेजेन्ट लेकर शत्रुघ्न सिन्हा के घर जाये और कोमल उसके पीछे अपना कुत्ता छोड़ दे।
लक्ष्मी दो नकली हाथ पहन कर अपने भूतपूर्व पति के घर जाये और उसे एक नया पैसा (खोटा) दे दे।
अब आप यह बताइये कि महमूद को अपने छः बच्चों के साथ किस ढंग से दीवाली मनानी चाहिए। सर्वश्रेष्ठ सुझाव को ५ रुपए पुरस्कार अधिक से अधिक तीन वाक्यों का प्रयोग कीजिये। अंतिम तिथि १२ नवम्बर ७८

आपस की बातें

चचा बातूनी की कलम दवात से

अपने प्रश्न केवल पोस्ट कार्ड पर ही भेजें ।

हंसराज गेरा, रिवाड़ी : चाचाजी आपने कौन-सी पार्टी को वोट दिया था ? कांग्रेस को या जनता पार्टी को ?

उ० : चिल्ली की टी पार्टी को ।

दिनेश मटाई 'राजा', इन्दौर : चाचाजी आदमी जीते जी कब मर जाता है ?

उ० : जब वह दीवानगी की बातें छोड़ कर स्याना बनने की कोशिश करने लगता है ।

राकेश कनौजिया, लुधियाना : दीवाना के अन्दर वाले अन्तिम पृष्ठ पर फिल्म एक्ट्रेस का फोटो देने की बजाय आप किसी क्रिकेट खिलाड़ी का फोटो दिया करें तो अच्छा रहे ।

उ० : आपके सुझाव पर अवश्य विचार किया जायेगा ।

सुखचरण सिंह बेदी : परोपकारी जी के साथ कैसा व्यवहार करना चाहिये ?

उ० : उनकी आखों में आई बाढ़ रोकने के लिए बाढ़ पीड़ित सहायता केन्द्र खोल देने चाहिएं ।

लाल बाबु गुप्ता 'मनोज'—हीरापुर : दुनिया में ऐसी कौन-सी चीज है, जिसकी रफ्तार सबसे तेज है ?

उ० : मनुष्य की सोचने की रफ्तार । इधर आपने अपनी बुद्धि का स्विच दबाकर मंगल-ग्रह के बारे में सोचा और उधर आप वहां पहुंच गये। दुनिया का कोई तेज से तेज "स्पेस शिप" इतनी जल्दी वहां नहीं पहुंच सकता ।

हरगुन जसवानी—मंडला : अंकल जी संसार में सबसे बड़ा दान कौन-सा है ?

उ० : आप कौन से दान की बात कर रहे हैं ? जरा साफ-साफ बताइये । पानदान, चूहे दान, नादान, खानदान या नमकदान ?

विजय शर्मा "बबू"—करनाल : चिल्ली का चेहरा सदा हमारी ओर ही क्यों रहता है ?

उ० : क्योंकि सच्चा आदमी न कभी अपनों से आंखें फेरता है और न मुंह मोड़ता है ।

याद के सुगंध—रिवाड़ी : सुना है ऊपर वाले ने आपको कुछ खास ढंग से बनाया है ?

उ० : हमारे ऊपर वाला—? वह तो कम्पयूटर बनाता है । हमारे जैसा आदमी किसी भी ढंग से बनाना बहुत मुश्किल है ।

सुरेशचन्द्र शर्मा 'निशांत'—जबलपुर : आप की बत्तीसी असली है या नकली ?

उ० : आप अपनी उंगली देकर देखिये । अपनी बत्तीसी में हम अपनी उंगली देकर तो देखने से रहे । हमारी उंगली असली है ।

मंगत अरोड़ा—पटियाला : आप कहते हैं कि गुमनाम है कोई प्रतियोगिता के विजेताओं को इनाम की रकम बराबर-बराबर बांटी जाती है, पर प्रतियोगिता नं० १२ में मैंने तो अपना नाम नहीं देखा ?

उ० : आपने अपना नाम नहीं देखा । हो सकता है हम आपका सही हल किसी कारण न देख पाये हों । यह देखने का ही चक्कर रहा ना ? वैसे हम बता दें कि हम कभी भी पक्षपात नहीं करते । सबको एक आंख से देखते हैं । और यह भी सही है कि हमारी दोनों आंखें हैं ।

राकेश गुप्ता—श्रीगंगानगर : बौने तो ऊंची हील के बूट पहन कर अपनी लम्बाई बढ़ा सकते हैं । पर जिसका कद लम्बा हो तो वह क्या करे ?



उ० : हम समझे जया भादुड़ी अमिताभ-बच्चन के लिए कुछ पूछना चाहती है । पर आप तो राकेश गुप्ता हैं । इसके लिए एक ही गुप्त ज्ञान है, जिसके लिए आप लम्बे हैं, उसे ऊंची हील के बूट पहनाइये ।

दिनेश कुमार श्रीवास्तव—नागपुर : मैं बिना दहेज लिये विवाह करना चाहता हूं । आप की क्या राय है ?

उ० : बिना पत्नी लिये विवाह कर लेंगे क्या आप ? हमारी हालत देखकर कुछ सबक ले लीजिये दिनेश कुमार जी ।

बीलाल अहमद 'कादरी'—बीकानेर : क्या मैंने यह सच सुना है कि आप जीनत अमान से शादी करना चाहते हैं ?

उ० : बार-बार ओखली में सर कौन देगा कादरी साहब । क्या आप कभी उससे मिले हैं, जो हमारे घर की जीनत है ।

अखिलेश्वर प्रसाद चौधरी—रोहतास : आप किसी सरकस से भागे हुए तो नहीं हैं ?

उ० : सरकस में तो हम भागकर आये हैं, आपके पास ।

केवल प्रकाश—काशीपुर : आजकल लोग दूसरों की बातों में पहले से अधिक टांग क्यों अड़ाने लगे हैं ?

उ० : क्योंकि दूसरों की बातों से उनकी टांग का कुछ नहीं बिगड़ता, जरा किसी से कहिये ना कि रेल के इंजन के नीचे अपनी टांग देकर देखे ।

देवेन्द्र—हिसार : मैं हास्यप्रद तथा अप्रकाशित कहानी भेजूं तो वह आप कब तक प्रकाशित कर देंगे ?

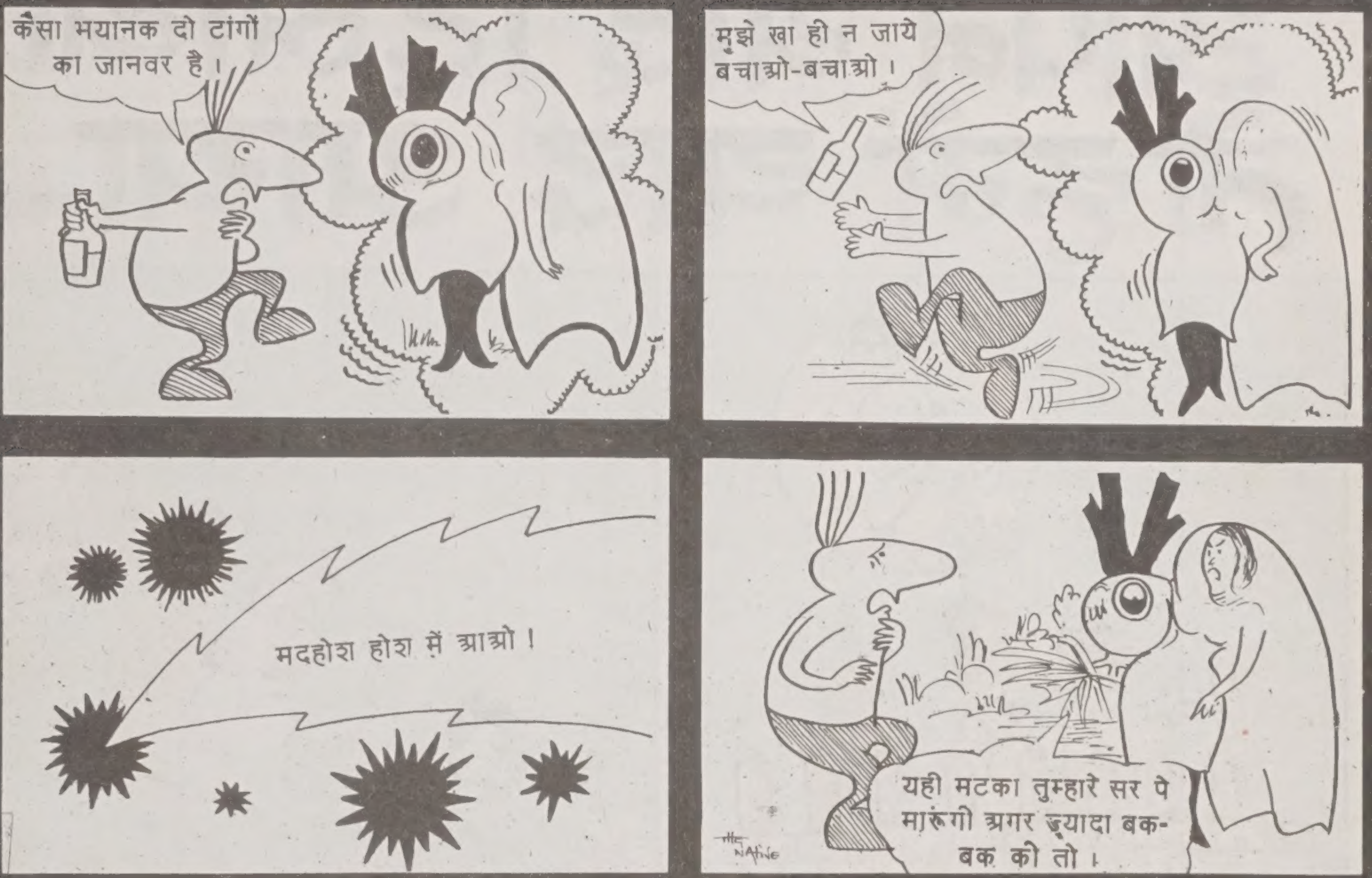
उ० : बस की लाइन में खड़े होकर कोई नहीं कह सकता कि वह कब बस में चढ़ जाएगा । वैसे हम अच्छी रचनाओं को प्रकाशित करने में अधिक देर नहीं करते ।

मनोज मोदी—बम्बई : कई साल से ऐसा लग रहा है कि आपकी उम्र एक जगह रुक गई है ?

उ० : चलिये ऐसा ही समझ लीजिये । हमारी उम्र एक सड़क है । जो कहीं से कहीं चली जाती है । पर सच पूछो तो सड़क कहीं नहीं जाती ।

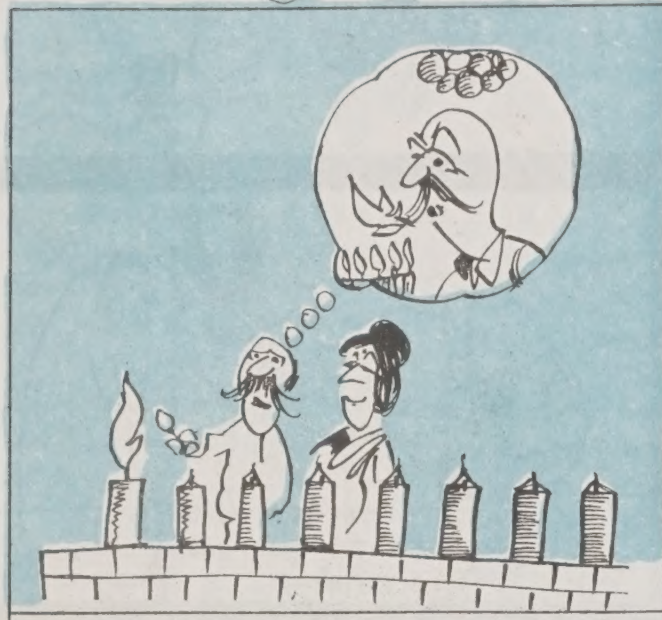
आपस की बातें
दीवाना साप्ताहिक
८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग,
नई दिल्ली-११०००२

मदहोश



कैसा भयानक दो टांगों का जानवर है ।
मुझे खा ही न जाये बचाओ-बचाओ ।
मदहोश होश में आओ !
यही मटका तुम्हारे सर पे मारूंगी अगर ज़्यादा बक-बक की तो ।

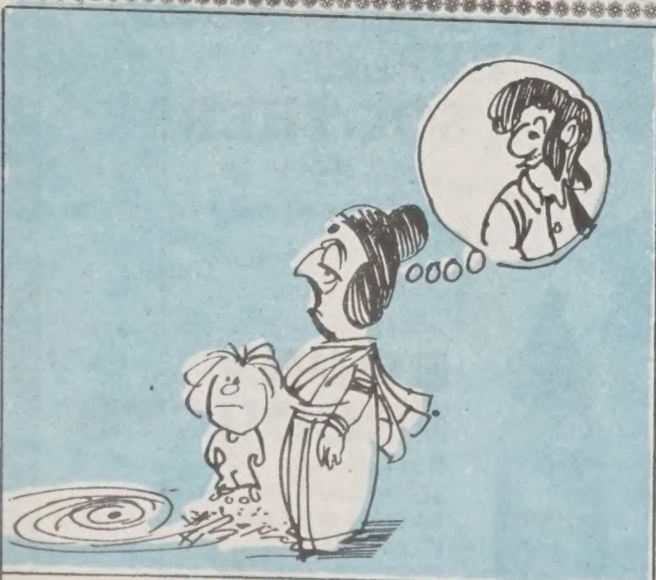
आपने याद दिलाया तो हमें याद आया...



मोमबत्ती जलाते याद आती है पिछले वर्ष की बर्थ डे पार्टी की, जब केक पर मोमबत्तियां बुझाते समय आपकी मूछों में आग लग गई थी।



माला के पटाखे एक-दूसरे से आग पकड़ छूटते देख याद आती है तब की जब आपकी लड़की नौकर के साथ भाग गई थी और अफवाह एक मुँह से दूसरे मुँह आग की तरह सारे शहर में फैल गई थी।



चक्कर चलते देख याद आती है पति की जो शादी से पहले किस तरह आपके घर व कॉलिज के चक्कर काटा करते थे।



पेंसिल जलते देख याद आती है बीवी की जो आपके ऑफिस की आपकी प्राइवेट सैक्रेटरी रुबी से इसी तरह जलती है।


फुलझड़ी चलाते हुये याद आती है परीक्षा की जव प्रश्न पत्र पढ़ कर आपकी आंखों के आगे तारे और वुलवुले उड़ते नजर आये थे
जल कर खत्म होते अनार को देख यांद आती है। आपके वोनस की, जो कुछ देर घर में कितनी रौनक पैदा कर गया था लेकिन शीघ्र ही आपके हाथ में खाली बटुवा भर रह गया था।
राकेट देख याद आ गई जनता पार्टी की, जिसके शासन में आते ही दाल व सब्ज़ी के भाव रॉकेट की गति से आसमान में चढ़ गये।
चांटा
तड़!
पटाखा चलते देख याद आता है उस वाक्य का जब आपने पड़ौस की नीना को पटाखा कहा था और उसने तड़ से आपके गाल पर चांटा मारा था।
बम को चलाते समय याद आती है पिता जी की, जब उन्होंने आपका परीक्षा फल कार्ड पढ़ा था। वे किस तरह फट पड़े थे।
रुपी
खराव पटाखा देख याद आती है उन लाटरी टिकटों की जिनसे आपने बहुत आशायें लगा रखी थीं परन्तु किसी पर पचास रुपये का इनाम भी नहीं निकला।

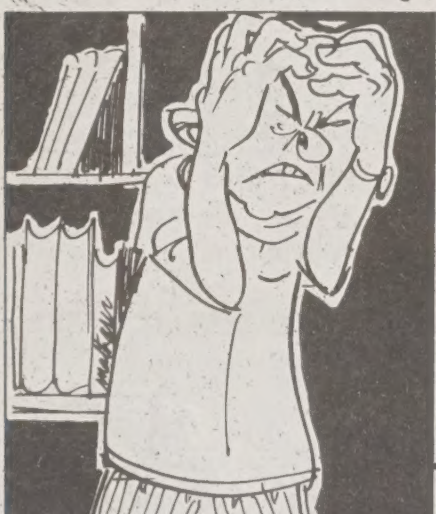
इन्तजार

श्रीराम आयंगार

वे बड़े साहब हैं। शहर भर में उनकी धाक है, जब वे अपनी चमचमाती कार में बैठ कर निकलते हैं तो लोग उन्हें झुक कर नमस्कार करते हैं। एक दिन मुझे भी उनसे काम आ पड़ा। उनके घर पहुंचा तो दरवाजे पर ही चपरासी ने मुझे रोक लिया।

'ऐ ऐ किनसे मिलना है?' उसने टोक कर पूछा।

'साहब से मिलना है, और किससे मिलूंगा?' मैंने शरारतपूर्ण लहजे में कहा। वह मुझे ड्राइंगरूम में ले गया और साहब को बुलाने चला गया। मैंने ड्राइंगरूम का मुआयना किया। सुसज्जित सुविधापूर्ण कमरा था और टेबल पर कई हिन्दी-अंग्रेजी पत्रिकाएं पड़ी थीं जिसे शायद ही किसी ने पढ़ने की कोशिश की हो। उन्हें भी ड्राइंगरूम की सजावट और बतौर फैशन के रखा गया था, यह समझते मुझे देरी न लगी। दस मिनट बीत गए थे लेकिन साहब नहीं आये। कुछ



देर मैं पत्रिकाओं के पन्ने पलटते हुए साहब के आने की टोह लेता रहा। लेकिन न ही साहब आये, और न ही वह चपरासी, जो अन्दर जाकर कहीं गायब हो गया था। समय कट नहीं रहा था। ड्राइंगरूम में बैठे मैं इधर-उधर देखता रहा। कमरे में रखे रेडियो, स्टीरियो सेट, टेलीफोन, आधुनिक पेंटिंग्स शेल्फ में रखे शेक्सपियर से लेकर गीता-महाभारत तक को पुस्तकों को देखते हुए मैंने समय देखा। आधा घण्टा हो चुका था। साहब तो नहीं, चपरासी वापस लौटा।

'साहब नहा रहे हैं,' चपरासी यह बता कर वापस कहीं कमरों में गुम हो गया। बैठे-बैठे मैं ऊब चला था। अब मैं इन्तजार के महत्व पर चिन्तन करने लगा। कितनी महत्वपूर्ण है यह इन्तजार की प्रक्रिया जिसके अभाव में शायद बड़े-बड़ों का महत्व न रहे! जो साहब या बड़ा (!) आपको इन्तजार करवा कर अपने को 'व्यस्त' साबित न कर दे, वह साहब या बड़ा साबित कैसे हो? हर व्यक्ति को किसी न किसी तरह के इन्तजार का अनुभव हुआ ही होगा (जिसे यह अनुभव न हो वह दुर्भाग्यशाली है)।

जैसे बस स्टाप पर इन्तजार अपने आप में एक अनुभव रहता है जब पांच मिनट का इन्तजार भी पांच घण्टों सा लगता है और बसों की अव्यवस्था पर तरस भी आने लगता है और गुस्सा भी। मजा तो तब और भी अधिक आता है जब बस की क्यू में खड़े इन्तजार करते रहने के बाद आपका नम्बर आते ही कण्डक्टर कह दे—'साहब जगह नहीं है। अगली बस में आइये!'

रेलवे बुकिंग खिड़की में लगी लम्बी लाइन जब धीरे-धीरे सरकती है तो इन्तजार से परेशान होकर झल्लाहट होती है कि 'बाबू धीरे-धीरे काम कर रहा है!' यही बात सिनेमा, पोस्ट आफिस, बैंक आदि पर भी लागू होती है जहां उपभोक्ताओं को इन्तजार की अहमियत समझ नहीं आती और झल्लाते फिरते हैं कि काम जल्दी नहीं हो रहा है। वे यह समझने में असमर्थ रहते हैं कि बाबू भी अपना काम जल्दी से जल्दी करके फुर्सत पाना चाहता है और दो हाथों से दस आदमियों का काम एक साथ करना असम्भव है।

राशन की लाइन में इन्तजार करना अपने आप में एक अनुभव होता है जिसमें लग कर आप बुजुर्गों से 'अपने जमाने' के सस्तेपन का भाषण और वर्तमान व्यवस्था की भर्त्सना सुनते हुए समय काट सकते हैं। लेखकों को तो इन्तजार के दौर से गुजरना ही पड़ता है जब उनकी रचनाएं प्रकाशित नहीं हो पातीं और अस्वीकृतियों का तांता लगा रहता है। रचना भेजने के सातवें दिन से ही पोस्टमैन महोदय का बेसब्री से इन्तजार प्रारम्भ हो जाता है और लगने लगता है कि सम्पादकगण रचना के निर्णय में व्यर्थ ही देरी लगा रहे हैं।

मेरे चिंतन में बाधा तब आई, जब चपरासी पुनः ड्राइंगरूम से आया।

'साहब नाश्ता ले रहे हैं,' मेरे द्वारा कुछ पूछने से पहले ही चपरासी बोल पड़ा। मालूम नहीं साहब ने नाश्ते में क्या-क्या खाया, मुझे चपरासी द्वारा बार-बार दी जाने वाली रनिंग कमेंट्री का आधा घण्टा और इन्तजार करना पड़ा।

'साहब हाथ धो रहे हैं।'

'साहब कपड़े बदल रहे हैं।'

'साहब तैयार हो रहे हैं!'

'साहब चाय पी रहे हैं!'

'साहब आ रहे हैं...!'

साहब सचमुच आ जाते हैं। जिस तरह किसी भक्त की तपस्या से प्रसन्न होकर भगवान बिजली की गड़गड़ाहट और चमक-दमक के साथ भक्त को दर्शन देते हैं उसी तरह साहब के ड्राइंगरूम से प्रवेश करते ही चपरासी द्वारा एयर कण्डीशनर चालू कर दिये जाने से ठण्डी-ठण्डी हवा बहने लगती है और साहब द्वारा लगाये 'इन्टीमेट' इत्र की खुशबू चारों तरफ फैल जाती है। मैं उन्हें नमस्ते करके आने का कारण बताता हूं। वे कुछ देर सोचते हैं और मैं इन्तजार करता हूं।

'आपका काम हो जायेगा,' वे कहते हैं।

'कब तक?' मैं जानना चाहता हूं।

'थोड़ा इन्तजार करना पड़ेगा,' उनका जवाब रहता है।

मैं लौट आता हूं। इन्तजार करता हूं। इन्तजार कर रहा हूं। वैसे भी पहले से ही अपने प्रमोशन का, मासिक राशन कोटे का, किराए के मकान के मिलने का, गैस के चूल्हे का नया कनेक्शन आदि मिलने का इन्तजार कर ही रहा हूं फिर उसमें यह एक नयी कड़ी जुड़ भी जाए तो मुझे कोई फर्क नहीं पड़ता, न ही झल्लाता हूं। बस! इन्तजार करता हूं, और इन्तजार!

साभार-हास्य



फिर दीवाली आ गई भाइयों ।
पिछले साल थोड़ी-सी गड़बड़ हुई, वर्ना लक्ष्मी जी को हमारे घर आना ही पड़ता । इस साल पक्का इन्तजाम करना है ।
उतना ही पक्का इंतजाम करना जितना चौधरी चरणसिंह ने इंदिरा जी के खिलाफ किया था ।
थम देखते रहियो ।
हम अपने प्लाट में वह सब मसाला रखेंगे जो सलीम जावेद अपनी कहानियों में रखते हैं । मारपीट, सैक्स, रोमांस और सस्पैंस । लक्ष्मी जी को अपने घर बुलवाना है तो उनकी सवारी उल्लू को फांसो । सवारी तो उधर ही जायेगी जिधर गाड़ी जायेगी । उल्लू पर जाल डालने का एक ही तरीका है, सैक्स रोमांस !
लो हमने गुब्बारे पर रंगदार ऊन और रुई चिपका कर मादा उल्लू बनायी ।
यह यौवन की दहलीज पर खड़ी है । अलहड़पन इसके व्यवहार में है । गाल गुलाबी और नैन शराबी हैं । आंखें हिरणी-सी, कमर पतली और नजर बिजली…
इसकी आंखों में हम रेडियम लगायेंगे ताकि दीवाली की रात को असली उल्लू की तरह इसकी आंखें चमकें । बस हम डोर से बांध कर उस रात इसे हवा में ऊपर छोड़ देंगे । लक्ष्मी जी उल्लू पर सवार होकर स्वर्ग से आकाश में पधारेंगी । उल्लू की नजर इस पर पड़ेगी । उसे लगेगा जैसे किसी ने उसके कलेजे में स्टेनलैस स्टील की छुरी घोंप दी है । दिल की धड़कनें तेज हो जायेंगी । सरकार कच्चे डोर से बंधे इश्क में घायल होकर इसकी ओर आयेंगे । हम इसे डोर समेट कर अपनी ओर खींचते जायेंगे, खींचते जायेंगे ।
और अंत में सवारी इसी छत पर उतरेगी । हम तीनों वर्दी पहन कर लक्ष्मी जी को गार्ड ऑफ आनर पेश करेंगे और उनके स्वागत में यहीं छत पर भाषण का आयोजन करेंगे ।


भाई लोगों यह तो बात पक्की हो गई कि लक्ष्मी जी को इस बार हमारे गरीब खाने पर पधारना ही पड़ेगा। उनकी खातिर-तवाजे का भी तो प्रोग्राम फिट करो।
हम उनको लाकर इस सोफे पर बिठायेंगे। कल ही दर्जी को बुलाकर आसमानी रंग के मखमल का कवर चढ़वायेंगे इस पर।
अमरीका से एक कोकाकोला की बोतल मंगवा कर हम फ्रिज में डाल कर रखेंगे। दीवाली तक खूब चिल्ड हो जायेगी। साथ में काजू और किशमिश पेश करेंगे।
The matter is very delicate. उनके स्वागत के लिये हमें पहले से ही रिहर्सल करना है ताकि बाद में कोई गड़बड़ न हो। लक्ष्मी जी कमरे में आयेंगी तो तीनों को लपक कर उनके पैरों पर लोट जाना है। मान लो यह लैम्प लक्ष्मीजी हैं।
इसे दरवाजे के पास मैंने खड़ा किया। जैसे ही मैं क्लैप दूंगा सबको ZOOM के साथ पैरों का दण्डवत करना है। रेडी... वन...टू...क्लैप।
ग्रामोफोन रिकार्ड चालू।
टक!
बहुत शुक्रिया, बड़ी मेहरबानी, मेरी जिन्दगी में हुजूर आप आये...कदम चूम लूं।
Action!
सिरों की टक्कर!


पहले इस गिरामोफोन को बन्द कर लो फिर हम इस दुर्घटना की जांच के लिए उच्चस्तरीय वार्ता करेंगे।
बहुत शुक्रिया !
हमारी नजरों के कम्पास खराव हो गिए।
बड़े सरम की वात है। रिहर्सल में ही ऐसा हो रिया है तो आगे जाकर क्या होगा? थम लोगों को कोई काम ठीक से करना आता है। लक्ष्मी जी के सामने ऐसा हो तो वह हमें उल्लू का खानदानी समझेंगी।
भाई जी थमारे सिर पर कुछ तो उगा। लोग तो वंजर ही समझते थे इसे।
यह तो अनजाने में अच्छा ही होगा। वह थमको अपने ड्राइवर उल्लू के ही भाई भतीजे समझ लेंगी। वस फिर थम पर उनकी कृपा दृष्टि होते कोई देर नहीं होगी।
तीनों का एक साथ दण्डवत करना ठीक नहीं रहेगा। थमको अपनी वीयरिंग का ही पता नहीं लगता। अव हम प्रेक्टिस वारी-वारी करेंगे।
जैसा थम ठीक समझो भाइयों।
यही है सारे झगड़े की जड़।
पहली वारी सिलविल की है। जैसे ही मैं क्लैप दूंगा फुर्ती से लपक कर दरवाजे पर रखे लैम्प को साक्षात लक्ष्मी जी मान कर इसके चरणों पर यानि नीचे स्टैंड पर लोट लगानी है।
रेडी वन टू क्लैप !
एक्शन !
शावाश वेटा ! लैम्प मां वल्व था नहीं। इस्टैंड टेढ़ा हो गिया। स्विच पहले से ही ऑन था। कवर झटके से उतर गया। वल्व के सॉकेट में दरवाजे का लोहे का हैंडिल घुस गिया और हमारे आसपास पचास मील तक के फ्यूज उड़ गये होंगे। विजली वाले आयेंगे और मीसा में पकड़ कर थमको ले जायेंगे।
BANG
ऐह !



मिलबिल पिलपिल के नये कारनामे अगले अंक में पढ़िए ।

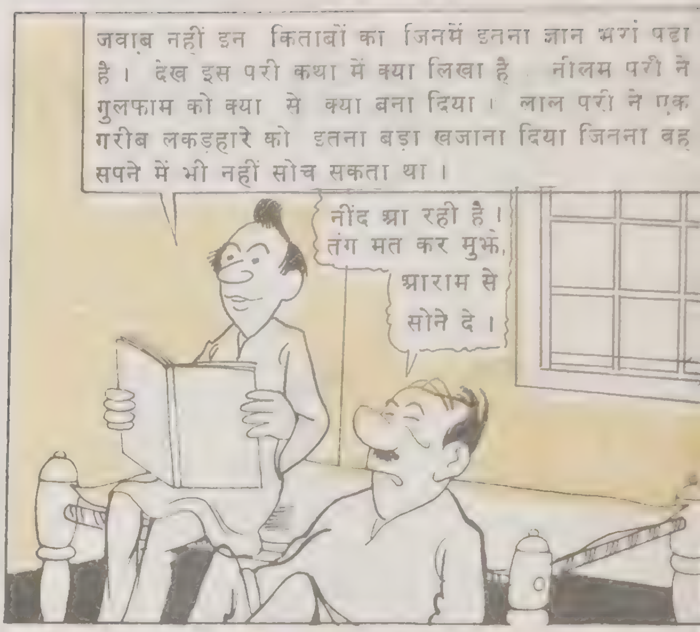
बन्द करो बकवास



हम-तुम इक कमरे में बन्द हों
ओर चाबी खो जाए !
बन्द करो बकवास, एक तो पब्लिक प्लेस में खुलेआम इश्क करते हो, ऊपर से कहते हो कि जेल के एक ही कमरे में बन्द करें ।
SHO
गिर गया झुमका
गिरने दो
बन्द करो बकवास, अपने प्लास्टिक के झुमके को मेरे दूध में गिरा दिया, बेड़ा गर्क हो तुम्हारा ।
मन तड़पत हरि दर्शन को आज ।
बन्द करो बकवास, तुम्हें कितनी बार कहा है कि संजीव कुमार को भूल जाओ ।

भगवान ने किस्मत में मेरी लिख के गरीबी,
फरमाया मिजाज इसका अमीराना बना दो ।

यही हाल है किस्मत के मारे छुट्टन और मिटुन का । दिमाग में तो इनके अमीराना ठाठ हैं, पर गरीबी से तंग आकर सोचते हैं कि इस जीने से तो मौत अच्छी है और जी रहे हैं तो इस उम्मीद पर कि कोई जादू की छड़ी कभी तो इनके सपने साकार करेगी ।






जीवन कितना प्यारा है ।
सामने खुशियां ही खुशियां हैं,
पर ग्रधिक खुशी भी कभी-कभी रास नहीं ग्राती । किस्मत की डोर तो कहीं ग्रौर बंधी थी । ग्रौर छुट्टन की हालत उर्दू के एक बदले हुए शेर की तस्वीर बन गई थी :
किस्मत खुदा की देखिये लटकी कहां कमन्द,
दो हाथ ही जब ग्रौर खजाना परे रहा ।
ग्ररे, सोते-सोते सपने ही देखता रहेगा । ग्रांखें खोलकर देख परी कथा में क्या लिखा है । एक गरीब ग्रादमी के पास लाल परी ग्राई ग्रौर उसे बहुत बड़ा खजाना देकर माला-माल कर गई । जरा सोच तो ऐसी परी तेरे पास ग्राए तो…
मैं कहूंगा, रस्सी ग्रपने गले में डालकर मेरे वाला सपना देख ले ।

खेल खेल में

विकास गक्खड़—जालन्धर शहर .

प्र० : विश्व में बालीबाल का कौन-सा खिलाडी प्रसिद्ध है । वह कहाँ रहता है ?

उ० : पोलेंड बालीबाल में ग्रोलम्पिक चैम्पियन है । वहीं के खिलाड़ी सर्वश्रेष्ठ हैं । उनके बारे में शीघ्र ही विवरण प्रकाशित करेंगे । इंतजार कीजिये ।

प्रहलाद जसवानी—मन्डला

प्र० : हाल ही में चल रहे ग्रास्ट्रेलिया इंग्लैंड क्रिकेट में ग्रास्ट्रेलिया के हारने का मुख्य कारण क्या है ?

उ० : बैटिंग की कमजोरी । कहते हैं कि इंग्लैंड जाने वाली ग्रास्ट्रेलियाई टीमों में १०० वर्षों में यह सबसे कमजोर टीम थी । यह भी संभव है कि पैकर सर्कस की छाया के कारण वे मानसिक रूप से परेशान रहे होंगे ।

अखिलेश्वर प्रसाद चौधरी 'उषा'—रोहतास

प्र० : क्या हाकी के जादूगर ध्यानचंद के लड़के ग्रशोक को, जो कि हाकी के ग्रच्छे खिलाड़ी हैं, ग्रोलम्पिक जाने वाली टीम में शामिल नहीं किया गया है ?

उ० : ग्रोलम्पिक टीम का तो ग्रभी चयन भी नहीं हुग्रा । फिलहाल ग्रर्जेन्टाइना जाने वाली टीम में भी ग्रशोक नहीं है (विश्व कप १९७४) में उन्हें पहले कैम्प में ग्रामन्त्रित न कर ग्रपमानित किया गया । बाद में देश में शोर मचा तो ग्रन्तिम समय बुलावा भेजा गया । तब ग्रशोक ने खुद ही कैम्प में शामिल होने से इन्कार कर दिया । भारतीय ग्रधिकारियों की धांधलेबाजी से उसका दिल भर गया है ।

एस. मंजूर हसन 'कादरी'—बीकानेर

प्र० : भारत का प्रथम टेस्ट मैच किस देश के साथ हुग्रा था । उस समय टीम का कप्तान कौन था व किसकी जीत हुई थी ?

उ० १९३२ में इंग्लैंड के साथ । इंग्लैंड की टीम जीती थी । इस मैच के कप्तान सी. के. नायडू थे ।

अशोक कुमार धवन—मेरठ

प्र० : विश्व कप टेनिस टूर्नामेंट में पुरुष डबल चैम्पियन शिप किसके पास हैं ?

उ० : टेनिस में वर्ल्ड कप नहीं है । टेनिस लॉन टेनिस का ही पर्याय बन गया है । इस खेल की विश्व स्तर की दो ही प्रतियोगिताएं हैं विम्बलडन तथा डेविस कप ।

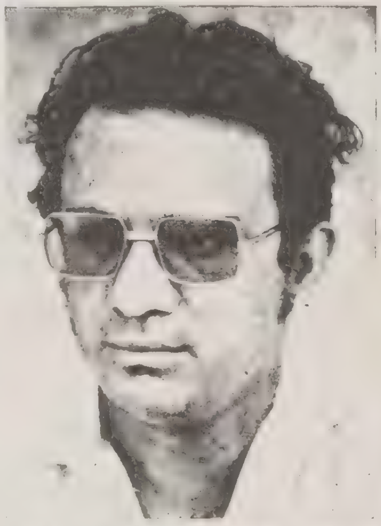
अशोक कुमार ठाकुर—नरसिंहपुर

प्र० : बेदी ग्रब तक कितने टेस्ट खेल चुके हैं ग्रौर कितने विकेट ले चुके हैं ?

उ० : ३३ टेस्ट ग्रौर २१५ विकेट ।

राज किशोर वर्मा—मधुबनी

प्र० : ग्रशोक मांकड़ का उच्चतम स्कोर क्या है ?



उ० : मांकड़ का उच्चतम स्कोर ९७ है । यह उन्होंने ग्रास्ट्रेलिया के विरुद्ध बनाया था ।

प्रदीप कुमार ढल—मुरादाबाद

प्र० : निम्नलिखित मध्यम गेंदबाजों को क्रम दीजिये ?

घावरी, जान लीवर, मदन लाल, विलिस, इमरान खान ग्रादि ।

उ० : विलिस, इमरान, लीवर, घावरी व मदनलाल ।

भंवरलाल आचार्य 'राजस्थानी'—कलकत्ता

प्र० : क्या कभी भारत के किसी खिलाड़ी ने दो सौ से ग्रधिक रन बनाये हैं ?

उ० : कई खिलाड़ियों ने बनाये हैं । वर्तमान टीम में भी गावस्कर है जिन्होंने २२० रन बनाये थे ।

अखिलेश्वर प्रसाद चौधरी 'उषा'—रोहतास

प्र० : 'बुल फाईटिंग' कैसे होता है, एव भारत में इस खेल का कोई खिलाड़ी है कि नहीं ? नाम बतायें ?

उ० : 'बुल फाईटिंग' स्पेन में होती है । खिलाड़ी लाल कपड़ा दिखाकर बुल (सांड) को ग्राक्रमण के लिए ललकारता है । बुल जब चार्ज करता है तो वह एक ग्रोर हटकर बचाव करता है ग्रौर मौका देखकर तलवार से उसे घायल कर देता है । भारत में यह खेल नहीं होता । यह खेल केवल स्पेन में होता है ।

कु० जेड० रानो—भागलपुर

प्र० : ग्रोलम्पिक खेल में भारत ने ग्रब तक कितने स्वर्ण पदक जीते हैं ?

उ० : सात ।

चन्द्र प्रकाश—हाथरस

प्र० : पैकर सुपर टेस्ट श्रृंखला का विश्व क्रिकेट पर क्या ग्रसर पड़ेगा ?

उ० : टेस्ट क्रिकेट ग्रच्छे-ग्रच्छे क्रिकेट स्टारों से वंचित हो जायेगा ।

सोमनाथ नन्दवानी—फरीदाबाद

प्र० : ग्राजकल पैकर क्रिकेट की काफी चर्चा है क्या कभी पैकर साहब खुद टेस्ट खिलाड़ी रहे हैं ।

उ० : नहीं । पैकर साहब टी० वी० सेठ हैं । पैकर सीरीज भी नांवा कमाने के चक्कर में ही शुरू कर रहे हैं ।

निरंजन कुमार मिश्र—रांची

प्र० : क्या गायकवाड़ भारतीय टीम में ग्रोपनिंग भूमिका ग्रच्छी तरह निभा सकते हैं तथा उनका रिकार्ड बतायें ।

उ० : गायकवाड़ में जमे रहने की क्षमता है । वैसे उनकी बैटिंग बहुत सीमित है । यूं कहना चाहिये कि जब बादाम न मिलें तो चनों से ही गुजारा करना पड़ता है । गायकवाड़ ने १३ टेस्टों में ७०३ रन बनाये हैं । ८१ उनका उच्चतम स्कोर है ।

खेल-खेल में
दीवाना साप्ताहिक
८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग,
नई दिल्ली-११०००२

मोटू-पतलू की रहस्य कथा

मौत का साया

घसीटाराम जी के साथ किसी का एक दिन के लिये निबाह हो जाये तो बडी बात है। पर पिछले सप्ताह उन्होंने सेठ शंकर दयाल के यहाँ पूरे पांच दिन काम किया है और अब ऐसा पंजाब मेल बन गये हैं कि उनकी हालत देखेंगे तो आप सर दीवार से दे मारेंगे... **किस का** यह मत पूछिये।




मेरी समझ में तो एक ही बात आई है कि तुम मेरे साथ किसी धंधे में नहीं खप सकते ।
तो क्या अब तक छाछ बिलोकर कोशिश कर रहा हूं मैं ?
तुमने कहा था, मुझे कैमिकल चलाने का बीस साल का तजुर्बा है । मैंने तुम्हारी बात मान ली और तुम्हें अपनी कम्पनी का प्रोडक्शन मैनेजर बना लिया । और तुमने मेरे कैमिस्टों को दवाओं में मिलावट करने को उकसाना शुरू कर दिया । तुमने कहा मछली के तेल में गोले का तेल मिला दो ।
मैंने मिट्टी का तेल मिलाने को तो नहीं कहा था । गोले का तेल कौन-सा जहर होता है ।
पर मछली के तेल जितना फायदा तो नहीं करता ।
पर हमारी जेब को तो फायदा पहुंचाता है । कभी हिसाब भी लगाया आपने कि जिस मिलावट से जनता की सेहत को धेले का नुकसान नहीं पहुंचता, उससे हमें एक साल में कितना फायदा होगा ?
यह धोखा है, सरासर अन्याय है ।
फिर तेल तो तिलों में से निकलेगा सेठजी । घसीटाराम में से तो निकलने से रहा ।
फिर मैंने कहा आगरे में मेरी जूतों की कम्पनी घाटे में चल रही है । उसके लिए कोई फायदे की स्कीम सोचो ।
तो मैंने बताया तो था कि जूतों के सोल में गत्ता लगाना शुरू कर दो ।
और विदेश से जूतों की सप्लाई का जो आर्डर मिला है उससेभी हाथ धो बैठूं ?
ने दूसरी तरकीब बताई थी बीस साल के तजुर्बे वाली ।



कि फैक्ट्री के गोदाम में झूठा स्टाक शो करके और अधिक रुपयों में फैक्ट्री का इंशोरेंस करा लूं और खुद फैक्ट्री में आग लगाकर झूठे क्लेम से दस बारह लाख रुपया वसूल कर लूं।
आजमाया हुआ फार्मूला है। भारतवासियों के कैरेक्टर पर पूरा उतरता है। आग लगाने वाले और रोने-धोने वाले सब किराए पर मिल जाते हैं।
मैं कहता हूं, तुम दफा हो जाओ यहां से 'यू प्लीज'. . . .
क्या शराफत है। मैंने पांच दिन काम किया है यहां और अब बिना कुछ लिए दिए आप कह रहे हैं गेट आऊट'।
क्या लेना देना है ? किया ही क्या है तुमने ?
मैंने पांच दिन काम किया है। लाखों रुपए के फायदे वाली स्कीमें समझाई हैं। तुम उनसे लाभ न उठाओ तो क्या मेरा हिस्सा भी मारा जाएगा ?
यानि आप मुझे कुछ नहीं देंगे।
एक पैसा भी नहीं।
पांच दिन काम करके पचास रुपए तो मजदूर भी कमा लेता है।
तुम पचास रुपए की बात कर रहे हो। मैं पांच कौड़ी भी नहीं दूंगा।
शोर सुन कर घर के नोकर-चाकर जमा हो गए। और उन्होंने घसीटाराम जी को पकड़ लिया। पर घसीटाराम जी अब भी ताव खाए जा रहे थे...!
छोड़ो, जाने दो। क्यों इतना गुस्सा करते हो ?
क्या छोड़ूं, क्या जाने दूं। देख लूंगा इस सेठजी को। मेरा इतना समय नष्ट किया है और अब कह रहे हैं, पचास रुपए भी नहीं देंगे। मेरी शराफ़त देखी है। मेरा गुस्सा नही देखा है। मैं जान से मार दूंगा इन्हें। मैं पचास रुपए वसूल करके दिखाऊंगा अपने।


जाने दो भाई. जाओ, अपने रास्ते लगो ।
जाने क्या दूं, मैं कोई कुत्ता हूं जो मुझे इस तरह फिंकवाया है । मैं अपनी बेइज्जती का बदला लूंगा । मैं चांदनी चौक बना दूंगा सेठजी का ।
घसीटाराम जी अपनी रोनी सूरत लेकर घर की ओर चले तो चोट खाये हुए सांप की तरह तिलमिला रहे थे । इज्जत तो बहुत खराब हुई थी, पर इतनी बड़ी बेइज्जती आज तक खराब नहीं हुई थी ।
अगले रोज शाम को घसीटाराम जी मोटू पतलू डिटेक्टिव एजेंसी पहुंचे तो वहां चेलाराम एजेंट ७०७ अपने साथियों के साथ मिस्ट्री हल करने में लगा हुआ था ।
जिस कमरे में हत्या हुई वहां लेडीज सेंडिलों के निशान पाए गए हैं ।
तो क्या जरूरी है हत्या लेडी ने की हो ? कोई आदमी भी तो वहां लेडीज सेंडिल पहन कर जा सकता है ।
मुझे बताओ, क्या बात है ?
बात यह है कि घसीटाराम जी खड़े हों और हथकड़ियों के लिए अपने हाथ आगे कर दें ।
इस आवाज पर सबने गर्दन घुमाकर देखा, तो दरवाजे पर पुलिस थी ।
क्या बात है इंस्पेक्टर ?
बात इतनी-सी है कि घसीटा राम ने सेठ शंकर दयाल का खून किया है । और जान बचाने के लिए यहां आ छुपा है ।


ख ख खून—! श श शंकर दयाल का खून !! मैंने किसी का खून नहीं किया है ।
जिन्होंने आंखों से देखा है, वे झूठ बोल रहे हैं क्या ?
जो कहना है वह अदालत में कहना ।
घसीटाराम को हत्या के अपराध में पुलिस पकड़कर ले गई, यह चक्कर क्या है ?
कितना भी चक्कर बाज सही । पर वह किसी की हत्या नहीं कर सकता ।
कल से वह खोया-खोया और घबराया-घबराया तो था ।
पुलिस स्टेशन जाकर पता करो
POLICE STA
दूसरों के केस सुलझाते थे यहां अपना ही केस फंस गया है ।
जितने सबूत हैं और जो एविडेंस हैं, उनसे पता चलता है कि यह हत्या घसीटाराम ने ही की है ।
मंगल डाकू
क्या कोई इस बात से इन्कार कर सकता है कि घसीटाराम पैसे का लालची है ?
पैसे का लालची तो है ।



इस भयंकर कहानी के अगले हंगामे के लिए दीवाना का आगामी अंक पढ़ना न भूलिये।




THE GREATEST HAIR FIXER
SIMCO
Stainless HAIR FIXER
Magically fixes and refreshes your hair
USE AND FEEL
THE DIFFERENCE
TWISTING
COSMETIC
SIMCO
HAIR
FIXER
SIMCO
HAIR
FIXER
MANUFACTURERS
SIMLA CHEMICALS (P) LTD.
Chandni Chowk, DELHI-6
Bazar Gandanwala, AMRITSAR
Branches :- CALCUTTA -KANPUR -GHAZIABAD.

धारावाहिक जासूसी उपन्यास

भाग ४

आखिरी चीख

लेखक :
कैप्टन युद्धवीर

धनी विधवा सुधा गुजराल की दो बेटियां पूर्णिमा और नरोत्तमा बेहद सुन्दर थीं। पूर्णिमा शादी शुदा थी। उसका पति टूर से लौटा तो पूर्णिमा दिल डूब जाने से अपनी सहेली श्रद्धा के घर मृत पाई गई। मौत स्वाभाविक न होने से उसके पति ने केस जासूस बलजीत को सौंप दिया। अगली सुबह वैसा ही एक और केस हो गया। अमरूदों के टोकरे में एक माता-पिता को उनकी बेटी की लाश भिजवाई गई। टोकरा भिजवाने वाली थी एक सेठानी, एक काला भुजंग आदमी, एक सुनहरे रंग के बालों वाली युवती। इन तीनों के बारे में रहस्यमय बातें सुनने में आईं।

'इन्स्पेक्टर साहब ! मेरे विचार में वह सेठानी को लेकर आई थी। ऐसा भी हो सकता है कि फर्स्ट क्लास के वेटिंगरूम में जो काला भुजंग आदमी बैठा था, उसके लिए अमरूदों वाला टोकरा भी उसी कार से लाया गया हो। टोकरा वेटिंगरूम में पहुंचाने के बाद इलाहाबाद से आने वाली गाड़ी का इन्तजार किया गया।'

'इससे तो यह अर्थ निकलता है कि सविता की लाश इलाहाबाद से नहीं लाई गई।' इन्स्पेक्टर बोला।

'हां, जाहिर तो यही होता है। इस बात को आप यूं भी कह सकते हैं कि जाहिर ऐसा ही किया गया है।'

इन्स्पेक्टर ने अपनी पहले वाली बात दुहराई, उस औरत का छुरी चुराना बड़ा अजीब-सा लगता है। आपके विचार में इसका क्या अर्थ निकाला जा सकता है?'

'एक ही अर्थ मेरी समझ में आता है।'

'वो क्या ?'

'उस औरत के पास कोई हथियार नहीं होगा। उसे डर होगा कि कोई उस पर हमला कर सकता था। अपनी जान बचाने को उसने वह छुरी चुरा ली होगी।' बलजीत बोला।

'यह केस अचम्भों से भरपूर है। अभी तक तो कुछ भी हाथ-पल्ले नहीं पड़ा। अच्छा बलजीत बाबू, मैं आपको साढ़े छः बजे 'चित्रा होटल' में मिलूंगा।'

'यह जानकारी जरूर लाइयेगा कि डी० एल० ६१७८ नंबर की ऐम्बैसेडर गाड़ी किसकी है ?'

'जरूर लाऊंगा।'

बलजीत ने इन्स्पेक्टर से हाथ मिलाया और पुलिस स्टेशन से बाहर निकल आया।

शाम के साढ़े छह बजे इन्स्पेक्टर आदर्श अरोड़ा 'चित्रा होटल' में जासूस बलजीत से मिला। उस समय लॉन में बीयर-पार्टी हो रही थी। बलजीत की फुटबाल टीम ने फाइनल मैच जीत लिया और ट्राफी हासिल कर ली थी। अब उसकी टीम के खिलाड़ी विजय का समारोह मना रहे थे।

बलजीत ने इन्स्पेक्टर आदर्श को आते देखा तो स्वागत में दोनों हाथ फैलाए, आगे बढ़ा, 'आइये इन्स्पेक्टर साहब, आप भी हमारे जश्न में शामिल हो जाइये।' उसने एक साथी खिलाड़ी से कहा, 'इन्स्पेक्टर साहब को भी छलकता हुआ जाम पेश करो।'

खुशी का हुड़दंग लगभग घंटे भर तक चलता रहा।

खिलाड़ी चले गये तो बलजीत ने पूछा, 'इन्स्पेक्टर साहब ! अब कहिये, क्या रिपोर्ट लाए हैं ?

'रिपोर्ट नहीं, अचम्भा कहिये।'

'क्या मतलब ?'

'डी एल ६१७८ नंबर ऐम्बैसेडर गाड़ी का नहीं, एक फिएट कार का है।'

'ओह !'

'उस फिएट कार के मालिक स्वास्थ्य मंत्रालय के अधिकारी सुखपाल हैं। उनकी कार चालू हालत में नहीं है। कुछ अरसे से खराब पड़ी है।

'आपने उस फिएट कार की नम्बर-प्लेट देखी थी ?'

'नहीं।'

'क्यों ?'

'कोई उतारकर ले गया।'

'उतारकर ऐम्बैसेडर गाड़ी में लगा दी गई और हम सबको चकमा दिया गया।

'बलजीत बाबू ! यह अचम्भा ही तो हुआ !'

'हां; अपराधी चालाक और होशियार है।'

'तभी तो हम अंधेरे में टापते रह गए।'

फिएट की नम्बर-प्लेट जब दूसरी गाड़ी में लग जाएगी तो हम पकड़ किसे पाएंगे ? खैर, निराश होने की जरूरत नहीं है, इन्स्पेक्टर साहब !'

'बलजीत बाबू ! कल सवेरे सविता का पति और उसकी सास यहां पहुंच रहे हैं।'

'क्या सविता का ससुर नहीं आ रहा ?

'वह बेचारा दो वर्ष से पक्षाघात की वजह से चारपाई से जुड़ा हुआ है। वह तो सुना है अपने कमरे में पड़ा रहता है।'

'हूं।'

'मेरे विचार से हमें कल सुबह-सवेरे मिसेज प्रभा अग्रवाल के यहां पहुंच जाना चाहिये ताकि सविता के पति और उसकी सास से पूछताछ कर सकें।

'तो फिर आप सवेरे मेरे पास चले आइये। दोनों साथ-साथ चलेंगे।'

'मैं आ जाऊँगा।'

'एक ग्लास और पीजिये !' बलजीत ने आग्रह के साथ कहा, 'आज मैं भी निश्चिन्त हूं। अब पूरा दिन और पूरी रात इस केस पर ध्यान जुटा सकूंगा।'

इन्स्पेक्टर ने उसकी बात मान ली। बीयर का ग्लास खाली करके वह गेट की ओर बढ़ गया, जहां उसकी जीप खड़ी थी।

सुबह के साढ़े छह बजे थे।

इन्स्पेक्टर आदर्श अरोड़ा ने जासूस बलजीत के दरवाजे पर दस्तक दी। अनिला ने दरवाजा खोला। बलजीत, राजीव और अनिला पहले से तैयार थे। वे चारों बरेली रोड को चल दिये।

उनके पहुंचने से पहले गिरिजा किशोर और उनकी पत्नी प्रभा की सविता के पति और सास से झड़प हो चुकी थी। गिरिजाकिशोर ने यह आरोप लगाया था कि सविता के पति योगेन्द्र दीक्षित ने अपनी मां से मिल कर सविता को मार डाला। सास ने इस आरोप का कड़ा विरोध करते हुए कहा था कि उसे दिखाई कम देता है; पति चारपाई से जुड़ा पड़ा है; योगेन्द्र काम के सिलसिले में मिर्जापुर गया हुआ था; ऐसी हालत में बिना किसी लालच के सविता की हत्या कौन कर सकता था।

इस तरह गर्मा-गर्मी के बाद दोनों पक्षों ने अपनी-अपनी भड़ास निकाल ली थी।

आपके घर में कत्ल नहीं की गई तो वह घर से गई कहां थी?'

'इन्स्पेक्टर साहब! सविता के कत्ल की बाबत तो मुझे आपके टेलीग्राम से पता चला। मैं उसी समय मिर्जापुर से घर लौटा था, जब थोड़ी देर बाद आपका तार मिला। सविता को घर में न पाकर मैं भी बड़ा हैरान हुआ था। मैंने जब मां से पूछा तो इन्होंने बताया कि आधे घण्टा पहले वह घर में ही थी।'

मां ने कहा, 'हां, योगेन्द्र ने मुझसे पूछा था और मैंने यही जवाब इसे दिया था।'

इस बात पर बलजीत भी चकरा गया, इन्स्पेक्टर भी असमंजस में पड़ गया।



अब वे शांत थे उनके दिल निर्मल हो चुके थे।

जब बलजीत, अनिला, राजीव और पुलिस इन्स्पेक्टर वहां पहुंचे तो समधियों में किसी तरह का द्वेष भाव नहीं था।

गिरिजाकिशोर ने, दस्तक सुनकर स्वयं दरवाजा खोला और स्वागत किया।

ड्राइंगरूम में बैठ चुकने के बाद गिरिजा किशोर ने दामाद और समधिन का परिचय कराया।

इन्स्पेक्टर ने पूछा, 'आपको मेरा टेलीग्राम मिल गया था?'

'जी हां, मगर जरा देर से मिला। फिर भी हम टेलीग्राम पढते ही घर से चल पड़े।' योगेन्द्र ने उत्तर दिया।

इन्स्पेक्टर ने पूछा, 'सविता की हत्या किसने की? कहां की गई? अगर वह

बलजीत ने योगेन्द्र की आंखों में आंखें डालते हुए पूछा, 'आप एक झूठी कहानी सुना रहे हैं।'

'जी नहीं।'

'यह हो ही नहीं सकता। सविता की हत्या मेरे अनुमान से दो-ढाई दिन पहले हो चुकी थी। इस हिसाब से वह कल घर में जिन्दा कैसे हो सकती थी?'

इन्स्पेक्टर ने भी योगेन्द्र और उसकी मां को घुरकर देखा।

बलजीत बोला, 'सुनिये योगेन्द्र जी! आप हमें जो भी बताएँ, सच-सच होना चाहिये। आप अपनी बात जारी रखिये। आपकी मां के कथनानुसार जब आप घर पहुंचे तो उससे आधेक घंटा पहले सविता घर पर थी।'

'जी हां। मैंने यह सोचकर उसका इंतजार किया कि वह शायद बाजार गई होगी।'

'क्या आपके घर में नौकर-नौकरानी नहीं हैं?'

'नहीं। हमने जो-जो नौकर या नौकरानियां रखीं, सब के सब चोर निकले। तंग आकर हमने नौकर रखना ही छोड़ दिया। इसी कारण बाजार से सामान लाने हम ही लोगों को भागदौड़ करनी पड़ती है।' योगेन्द्र ने जवाब दिया।

जाहिर है कि सविता नहीं लौटी होगी।'

'थोड़ी देर बाद ही आपका टेलीग्राम मिल गया। मेरी आंखों के आगे दुनिया अन्धेर हो गई। टेलीग्राम दुबारा पढ़ा, तब भी मुझे सविता के मारे जाने पर विश्वास नहीं आ सका। मैं एक और बात पर भी हैरान था।'

'किस बात पर?'

'मां ने कहा था कि सविता आधेक घंटा पहले घर में थी। उस आधे घंटे के दौरान अगर वह कत्ल की गई थी तो इलाहाबाद से शाहजहांपुर आधे घंटे में उसकी लाश कैसे पहुंच गई?'

'आपने अपने पिता से नहीं पूछा?'

'पूछने पर भी क्या हो जाता?'

'क्यों?'

'वह न बोल सकते हैं, न हाथ हिला सकते हैं। उन्हें क्या मालूम कि आधा घंटा पहले उनकी बहू घर में थी या नहीं!'

योगेन्द्र की बात पर इन्स्पेक्टर आदर्श और बलजीत भी अचम्भे में पड़ गए। यह सोचने की बात थी कि इलाहाबाद से एक लाश आधा घंटे में शाहजहांपुर कैसे पहुंच गई?

योगेंद्र बोला, 'मैं तो सोच-सोचकर इस नतीजे पर पहुंचा हूं कि मेरी पत्नी का कत्ल तो जरूर हुआ है, मगर मेरे मिर्जापुर से घर लौटने से पहले जो कोई सविता घर में मौजूद थी, वह मेरी पत्नी नहीं थी।'

'तो आपकी गैर-मौजूदगी में जो कोई औरत आपके घर में थी, वह हत्यारों के गुट की रही होगी।' बलजीत ने कहा, 'बड़े अचम्भे की बात है कि आपकी मां को पराई औरत के घर में होने का शक तक नहीं हुआ।'

'बेटा! मैं आंखों से लाचार हूं। मुझे बहुत कम दिखाई देता है। आंखें बनवाई थीं, लेकिन बन नहीं सकीं। मुझे तो मेरे बेटे ने हैरान कर दिया जब इसने बताया कि मैं

शेष पृष्ठ ४३ पर


पैण्टम और डायना की शादी
अच्छी खबर क्या है मैं भी सुनूं डायना?
राजदूत कारी ने पत्र भेजा है एक नई नौकरी के बारे में। मैं, 'मानव अधिकार समिति' में काम करना चाहती थी मुझे नौकरी मिल गई।
मुबारक हो।
तुम्हें इसी समय आना था? जबकि मैं शादी की बात करने ही वाला था।
चाप चाप चाप चाप
मैं कितनी उत्तेजित हूं! मैंने इस नौकरी को पाने के लिये कितनी इन्तजार की है।
मानव अधिकार समिति?
कई जगह जेल में रहने वालों पर अत्याचार होते हैं उन्हें उनके अधिकार से वंचित रखा जाता है मेरी ड्यूटी उनकी कानूनी सहायता करना है।
कब्रिस्तान में फंण्टम के बीस पूर्वजों की समाधियां
करो करो करो करो करो
DO IT
उसके लिए इतनी सी बात पूछना कितना मुश्किल है जैसे ही वह पूछने लगता है कोई न कोई बीच में आ जाता है।
दो दिमाग एक ही बात सोचते हैं
इस समय नही पूछ सकता काफी लोग हैं।
डायना मेरे दिमाग में एक बात आई है।
सच?
आयो ईडन चलें!
चलो!
अच्छा समय काटना!
अब पूछ लूं?
ईडन
फंण्टम के ईडन द्वीप पर सब जीव जन्तु अपने मालिक की राह देख रहे हैं।
देखो सामने स्वागत के लिये खड़े हैं



कार्टून बनाइये प्रतियोगिता

आप निम्न चुटकुले पर कार्टून बना कर हमें भेजिये—सर्वश्रेष्ठ रेखांकन पर ५ रुपये पुरस्कार।

दीवार पर बुझे दीयों में से तेल पीती चिड़िया पास बैठे कव्वे से—लगता है तेल की कीमतें बहुत बढ़ गयी हैं। बस तलों में थोड़ा-थोड़ा सा तेल डाला गया है।

अन्तिम तिथि— १२ नवम्बर ७६

निबन्ध प्रतियोगिता

क्या आप निम्न विषय पर निबन्ध लिख सकते हैं ? कोशिश करके देखिये—सर्वश्रेष्ठ निबन्ध को ५ रुपये पुरस्कार—सौ से अधिक लायनें न हों।

विषय—'दीवाली त्योहार का जीव-जन्तुओं पर प्रभाव।'

अन्तिम तिथि— १२ नवम्बर ७६

निम्न में क्या समानता है बताइये

बालूशाही
पतीसा
नमकीन
कराची हलुवा
जीरा

सबमें एक-एक 'ई' की मात्रा है।

जब बनेगी फिल्मी सरकार (परिणाम)

शिक्षा मंत्री मनोज कुमार

फिल्मी दुनिया में अकेला मनोज कुमार ही तो है जिसने शिक्षाप्रद फिल्में बनाने का एकमात्र बीड़ा उठाया हुआ है उम्मीद है वह जल्द से जल्द ऐसी फिल्में बनायेगा जिससे बगैर स्कूल जाये शिक्षा मिलेगी हर महीने फीस, किताबों के बोझ आदि से छुटकारा और सरकारी खर्चे की बचत।

विजेता: उमेश कुमार रोहतक

परोपकारी

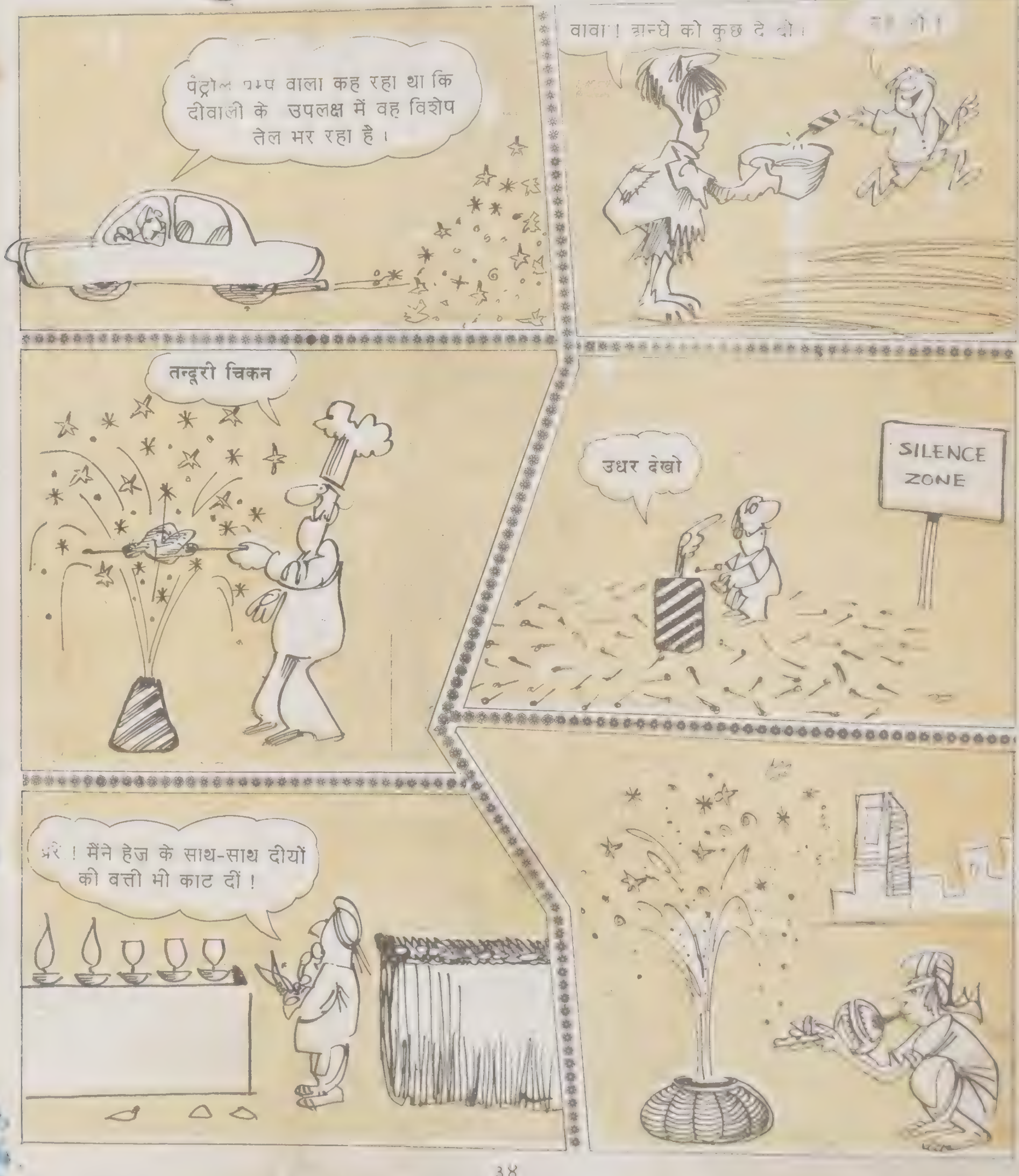


चल, भाग यहां से आ जाता है कहीं से।
अरे-अरे, यह क्या कर रहे हो?
क्यों बेचारे बेजुबान को मार रहे हो?
बेचारा? इसकी वजह से मुझे अपने मां-बाप से मार पिटती है। जब देखो मेरे पीछे घर में घुस आता है।
तो तुम ऐसा करो, इसे मारो नहीं, दूर पहाड़ी पर छोड़ आओ जहां से इसे तुम्हारे घर का रास्ता न आता हो।
बात तो ठीक है।
चल आ चलें।
शाबाश, जाओ इसे छोड़ आओ।
दूसरे दिन!
क्यों बेटा फिर वह कुत्ता तुम्हारे पीछे तो नहीं आया?
वो पीछे कैसे आता?
पीछे तो मैं उसके आया। जब पहाड़ी पर जा के मैं खुद ही रास्ता भूल गया तो उसके पीछे-पीछे चल के ही घर आना पड़ा। आपका बहुत-बहुत शुक्रिया, आगे से मुझे ऐसा ब्राइट आइडिया मत देना।



बातों-बातों में
जब तक तुम लोग चाँद पर पहुँचोगे, हमारा देश सूर्य पर पहुँच जाएगा
तुम मूर्ख हो, जब तुम सूर्य के निकट पहुँचोगे तो जल कर राख हो जाओगे
सब को अपनी तरह मूर्ख मत समझा करो, हम लोग रात को सूर्य पर जायेंगे

एक दीवानी आतिशबाजी


पेट्रोल पम्प वाला कह रहा था कि दीवाली के उपलक्ष में वह विशेष तेल भर रहा है।
बाबा! अन्धे को कुछ दे दो।
तन्दूरी चिकन
उधर देखो
SILENCE ZONE
अरे! मैंने हेज के साथ-साथ दीयों की बत्ती भी काट दीं!


अरे, बया बहन तुम अब तक दो पत्तों को सींकर घोंसला बनाती हो?
क्या मतलब ?
तुम्हें इतना भी पता नहीं दुनिया मे पिछले दस-बीस वर्षों मे कितनी औद्योगिक क्रांति यानि Industinal Revolution आई। हर काम आधुनिक ढंग से होता है। तुम सीने की बजाय माडर्न फामूला यानि दो पत्तों को स्टिकिंग टेप से जोड़ कर देखो।
इस बेवकूफ पिछड़ी बया को प्रेक्टिकल करके दिखना पड़ेगा।
पंचतंत्र
बया खुद भी टेप लेकर आती है।
देखो पत्ते टेप से किस सफाई से जुड़ गये। अब दूसरी तरफ तुम खुद टेप लाकर जोड़ो।
यह टेप तो बड़े काम की चीज है।
पहले पत्तों के किनारे एक साथ लाने पड़ेंगे। टेप का किनारा टहनी से चिपका कर यह काम करती हूं।
जैसे ही बया पत्तों के किनारे साथ लाने के लिये फड़फड़ाती है टेप का दूसरा सिरा उसके परों से चिपक जाता है और...
...और बया हवा में असहाय लटक जाती है।
शिक्षा–जहा देसी उपायों से काम
औद्योगिकरण की

दीवाली पर किसको क्या बख्शीश दें?

दीवाना की नेक सलाह



बर्तन मांजने वाली को

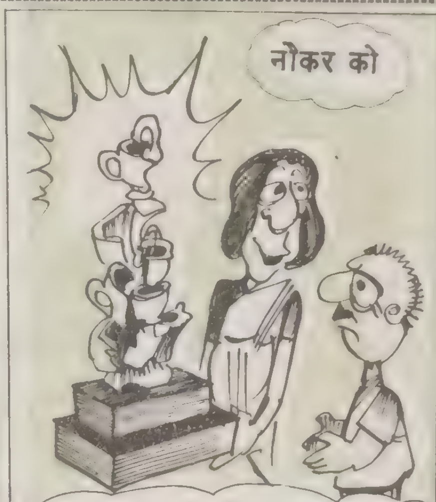
बर्तन मांजने वाली को आतशी शीशा दीजिये ताकि वह बर्तन धोकर शीशे से देख पाये कि कहीं मैल या चिकनाहट तो नहीं बची रह गई।



खराब लाइनिंग और घटिया स्विचों के कारण साल भर में जितने बल्ब फ्यूज हों उनकी माला बना कर इलेक्ट्रीशियन को बतौर इनाम दीवाली को पहनायें।



जब-जब जमादार कहीं कूड़ा-गर्द छोड़ जाये तब-तब एक लिफाफे में इकट्ठी करती रहें। दीवाली वाले रोज वह सारा एक डिब्बे में पैक कर उसे बख्शीश के रूप में दे दीजिये।



नौकर द्वारा तोड़े कप-प्लेटों को एक स्टैंड पर फेवीकोल से जोड़ें। अपने आप ही कलाकृति बन जायेगी। यही कलाकृति उसे इनाम में दे डालिये।



रात को चौकीदार सीटी बजा-बजा कर आपकी नींद चौपट करता रहता है। जगने पर आप सिगरेट बीड़ी पीते हैं। टोटों को बचा कर रखिये। दीवाली को यही टोटे एशट्रे में डाल उसे इनाम दीजिये।



धोबी जब-जब कपड़े फाड़ कर या बटनों का सत्यानाश कर लाता है तो कपड़ों की दुर्दशा देख आपको रोना आता होगा। यही आसू सुखाये जायें तो नमक बनेगा। इस तरह की नमक शीशी में जमा कर दीवाली के रोज धोबी को इनाम में दे डालिये।

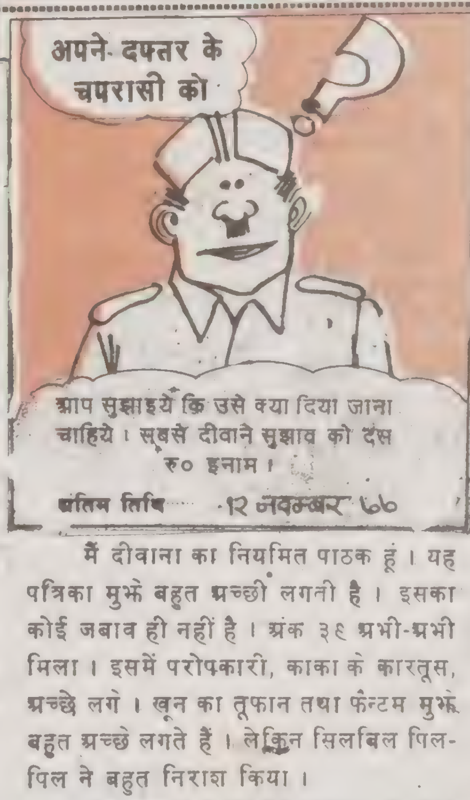


तार वाले को पुरानी खराब बेकार घड़ी बख्शीश में दे दीजिये। आखिर वह तार भी तो इतनी लेट ले आता है कि तार की कीमत ही नहीं रह जाती। बेकार होती है। चिट्ठी पहले पहुंचती है। बेकार सेवा का इनाम भी बेकार चीज होगी।









आपके पत्र

दीवाना का अंक ३९ एवं ४० मिला। पहले अंक में 'किस्सा कुर्सी' का पढ़कर मैं अपनी कुर्सी से ऐसा उछला कि आज तक पांव की उंगली में पट्टी बंधी हुई है। बाद के अंक में नए कलाकार छुट्टन और मिट्ठन से मिलकर बड़ी खुशी हुई तथा फिल्मी सरकार भी बड़ी मजेदार रही। एक शिकायत है कि अब दीवाना बुधवार के स्थान पर शुक्रवार को मिलने लगा है।

—दिनेश मित्तल 'हलवाई', गाजियाबाद

आपकी शिकायत शीघ्र ही दूर कर दी जायेगी। सं०

☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆

दीवाना का अंक ३९ व ४० मिला। मुख पृष्ठ काफी आनन्द-दायक था। यह जान कर बहुत खुशी होती है कि आप 'रंग भरो' प्रतियोगिता दे रहे हैं। चिल्ली का दिमाग बहुत तेज है जो हर सप्ताह नए-नए आइडिया दिखाता रहता है। मोटू पतलू, मदहोश, परोपकारी, चाचा बातूनी—सभी स्तंभ इतने रोचक थे कि पढ़कर मैं दीवाना हो गया। आप रंग भरो प्रतियोगिता को महीने में एक बार की जगह दो बार दिया करें।

विनोद कुमार भाटिया—मेरठ

मैं दीवाना का नियमित पाठक हूं। यह पत्रिका मुझे बहुत अच्छी लगती है। इसका कोई जवाब ही नहीं है। अंक ३९ अभी-अभी मिला। इसमें परोपकारी, काका के कारतूस, अच्छे लगे। खून का तूफान तथा फैन्टम मुझे बहुत अच्छे लगते हैं। लेकिन सिलबिल पिलपिल ने बहुत निराश किया।

क्या कारण है कि मैंने दीवाना में 'क्यों और कैसे' तथा खेल-खेल में, कई स्तंभ भेजे लेकिन आपने प्रकाशित नहीं किए। कृपया जल्दी प्रकाशित करें, निराश न करें।

—सन्दीप हैरीसन—आगरा

आशा है इस पत्र के छपने से पहले आपने अपने प्रश्नों के उत्तर देख लिए होंगे। सं०

☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆

मैं दीवाना का बहुत पुराना पाठक हूं। इस ३० अक्तूबर को पूरे पांच साल हो जायेंगे। मुझे पहले दीवाना इतना अच्छा नहीं लगता था जितना अब लगता है। अब तो दीवाना में चार चांद की जगह आठ चांद लग गए हैं। दीवाना के बराबर हास्य-व्यंग्य में मेरे लिए भारत में कोई और पत्रिका नहीं है। मोटू पतलू, परोपकारी, पिलपिल सिलबिल, मदहोश, फैन्टम, अर्थ-अनर्थ, काका के कारतूस, सभी एक से एक बढ़कर हैं। इस अंक में किस्सा कुर्सी का और सभी स्थाई सामग्री ने हंसा-हंसाकर पागल कर दिया।

—आलोक ए. पी., कानपुर

☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆

दीवाना का अंक ३९ मिला। जहां से मैं यह दीवाना लेता हूं, वहां गया तो मैं हंसने लगा। दुकानदार ने पूछा क्यों हंसते हो, मैंने कहा, इस दीवाना के मुख पृष्ठ पर हंसी आ रही है। तब मैंने दीवाना खरीदा और वहां से घर पहुंचने तक इतना हंसा कि मैं वह हंसना हमेशा याद रखूंगा।

मुझे दीवानी चिपकी भी बहुत अच्छी लगी। प्रेम पत्र भी काफी अच्छा था। मैंने किस्से कुर्सी के पढ़े तो मैंने फिर से वह पढ़ने शुरू कर दिए, यानि कि मैं 'किस्से कुर्सी के' बारे में कुछ लिखता हूं तो हंसी आ जाती है। मोटू-पतलू की बात ही मत पूछिये वह तो मैं हमेशा पढ़ता हूं।

खत्री पीताम्बर—उल्हासनगर

अर्थ अनर्थ

राजेश कुमार—दिल्ली

● 'हम आपको फ्रिज में लगाकर शर्बत देंगे', मेजबान ने मेहमान से कहा।
फ्रिज में किसको लगाना है, मेहमान को या शर्बत को ?

अनूप कुमार—जालन्धर

● मंच पर खड़े होकर वक्ता ने कहा, 'अब आपको एक वर्ष बाद नाटक दिखाया जायेगा।'
नाटक का नाम 'एक वर्ष बाद' है या…

?—जालन्धर

● एक होटल के बाहर बोर्ड लगा था, 'यहां पर आदमियों के खाने का अच्छा प्रबन्ध है।'
आदमी चटनी से खिलाये जाते हैं या छोलों से ?

● मास्टर जी लड़कों को चेतावनी देते हुये बोले, 'कल से किसी ने भी वहां साइकिल खड़ा किया तो उसकी हवा निकाल दी जायेगी ?'
हवा उस लड़के की निकाली जाएगी या साईकिल की ?

● दिनेश ने अपने नौकर से कहा, 'फौरन जाओ और सब्जी ले आओ।'
क्या सब्जियाँ भी विदेश से मंगाते हो खाने के लिए।

अशरफ अली खाँ—पटना

● मैं अंधेरे में डर के मारे पसीने से नहा उठा।
क्या नहाने को पानी नहीं मिला था ?

● मां ने बेटे को समझाया, 'राम नहाने के लिये नल से बाल्टी में पानी लेकर साबुन लगाओ।'
साबुन बाल्टी में लगाना है या शरीर पर ?

कृष्ण कुमार गोयल—बिजनौर

● राजू स्कूल से घर जा रहा था कि रास्ते में उसने ठोकर खाई।
क्या खाने को उसे और कुछ नहीं मिला था ?

निर्मल कुमार प्रसाद—धनबाद

● मां बोली, 'जाओ बेटा तांगा ले आओ।'
बेटा, 'मां बस अभी लाया।'
बस लानी है या ताँगा ?

जयकिशन अग्रवाल—बीकानेर

● ग्राहक सब्जी वाले से बोला, 'सब्जी पूरी तोल कर देना।'
क्या सब्जी के साथ पूरी भी बेची जाती है ?

दिलीप जैन—गोहाटी (असम)

● यह कपड़ा खूब चलेगा।
आदमियों की तरह कपड़ा भी चलने लगा है क्या ?

बद्री प्रसाद वर्मा—गोरखपुर

● मैं अपनी जान की बाजी लगा दूंगा।
जूए में या… ?

अनिल डी.—बम्बई

● एक ग्राहक जूता पहनते हुए दुकानदार से बोला, 'ये जूता तंग है।'



पहनने वाले से तंग है, जूता या…

शादाब खान—गोन्डा

● क्या बतायें यार! कल्लू की कल बीच बाजार में नाक कट गयी।
कैसे ? चाकू से या छुरी से…

आशुतोष शर्मा—पहलगाँव

● सेठ का नौकर पण्डित जी से बोला, 'आज आपको सेठजी ने घर खाने को बुलाया है।
पूरा मकान खाना है या…

सुखचरण सिंह—कलकत्ता

● भाई, बहन से बोला, 'पिताजी की सन्दूक में से निकाल कर कमीज दो।'
क्या पिताजी सन्दूक में बन्द हैं ?

अनिल कुमार—कलकत्ता

● सांप को देखते ही उसका कलेजा बैठ गया।
पहले क्या कलेजा खड़ा था ?

पंजवानी चन्दर—नई दिल्ली

● मोहन मेरे दस रुपये खा गया।
दस रुपए का माल खा गया या नोट ही…

खत्री राधे बी.—उल्हासनगर

● एक आदमी दूसरे से, 'भाई तुम्हारी घड़ी चल रही है ?'
सड़क पर या…

आनिस अहमद खान—कानपुर

● देखो बैलगाड़ी चला रहा है।
बैल, रेलगाड़ी चला रहा है या…

अवध किशोर—जबलपुर

● 'जरा जल्दी से मेरा बिल बना दीजिये', ग्राहक दुकानदार से बोला।
चूहे जैसा बिल या…

गुलाब प्रेमी—जबलपुर

● मैं कारखाने पर ही सोता हूं।
कारखाने के बाद ही सोते हो या…

● दीवाना अंक नं. ३८ में एक स्तम्भ था—ये अभिनेता अभिनेत्री न बनते तो क्या कर रहे होते ?
क्या अभिनेता, अभिनेत्री भी बन जाते हैं।

तेजपाल सिंह भाटिया—चण्डीगढ़

● प्रेमी अपनी प्रेमिका से बोला, 'तुम तो फूल हो।'
Fool (बेवकूफ) वाली बात कह रहे हो या फूल वाली ?

● यह मकान किराये पर चढ़ गया है।
क्या मकान को भी सवारी का शौक है ?

दीवाने कार्ड को मोड़कर देखिये

पहले बीच से मोड़िये फिर नं० २ की लाइन को १ नं० की लाइन से मिलाइये।



दीवाली का त्यौहार हर साल आता है। अमीर लोग बड़े खुश होते हैं क्योंकि यह लक्ष्मी जी के आगमन का अवसर है। लाला और ललाइन प्रेम से हाथ जोड़ कर लक्ष्मी जी की आराधना करते हैं। परन्तु क्या लक्ष्मी जी केवल भजन गाने और प्रार्थना करने से वश में होंगी? हम दीवाना वालों का ख्याल है कि लक्ष्मी जी की कृपा प्राप्त करने का एक ही तरीका है, वह क्या है मोड़कर देखिये—

क्यों और कैसे

प्र० : आग क्यों जलती है और कैसे जलती है ?
इसरार 'परवाना'—बेरमो

उ० : जलने का वैज्ञानिक नाम कमबश्चन अर्थात जलना है। जलने की क्रिया किसी दहनशील वस्तु के हवा में मिली आक्सीजन से मिलने पर होती है। जब आक्सीजन किसी दहनशील वस्तु के सम्पर्क में आती है तो जो प्रतिक्रिया होती है उसके फलस्वरूप आग उत्पन्न होती है। यदि इस प्रतिक्रिया की गति तेज है तो आग की लपटें दिखाई देती हैं परन्तु यदि प्रतिक्रिया की गति धीरे है तो आग तो जलती रहती है परन्तु लपटें नहीं दिखाई देतीं। उदाहरणतया यदि लकड़ी या कागज आक्सीजन के सम्पर्क में आते हैं तो लपटें पैदा होती हैं परन्तु इंजनों में जो दहन-क्रिया पेट्रोल के आक्सीजन के साथ मिलकर जलने पर होती है उसकी लपटें दिखाई नहीं देतीं, जलने की क्रिया के लिए आक्सीजन बहुत आवश्यक है। हवा में आक्सीजन लग-भग २१ प्रतिशत पाई जाती है। आक्सीजन किसी भी जलनशील वस्तु से मिल कर जलने को तत्पर रहती है। आग जलने के लिए दूसरा जलनशील पदार्थ होना भी आवश्यक है, जैसे लकड़ी, कोयला, तेल, मिट्टी का तेल तथा कोई भी जलनशील गैस। आग जलने की प्रतिक्रिया में वायु से लिए आक्सीजन के दो अणु, जलनशील पदार्थ से लिए गये कार्बन-डाई-ओक्साईड पैदा हो जाती है।

****

प्र० : विटामिन कितने प्रकार के होते हैं तथा विभिन्न प्रकार के विटामिनों की कमी से कौन-कौन से रोग हो जाते हैं ?
संदीप शर्मा—देहली

उ० : शब्द वीटा का अर्थ है जीवन, विटामिन जीवन के लिए आवश्यक तत्व हैं। ये पौधों तथा पशुओं द्वारा बनाए जाते हैं। ये शरीर को स्वस्थ रखने तथा शरीर के विकास कार्य को भली-भांति करने में सहायता करते हैं। उन्नीसवीं सदी के अन्त के दिनों में नाविकों को एक भयानक रोग स्कर्वी ने पीड़ित किया था। बहुत दिनों की खोज के बाद पता चला कि हरी फल, सब्जी न खाने के कारण ये रोग हुआ। लगभग १०० साल की वैज्ञानिक खोज के बाद पता चला कि ये रोग सब्जियों इत्यादि से इस कारण ठीक हुआ क्योंकि इनमें विटामिन पाये जाते हैं। विटामिनों की रसायनिक प्रकृति का पता न होने के कारण इन्हें कोई विशेष नाम नहीं दिया गया, केवल विटामिन ए, बी, सी, डी, ही कहा गया।

विटामिन ए रोग संसार से बचाव करता है। ये दूध, अण्डे की जरदी, जिगर, मछली के तेल, सलाद, गाजर तथा पालक इत्यादि में पाया जाता है।

विटामिन बी काम्पलेक्स दूध ताजे फल सब्जियों साबुत अनाज इत्यादि में पाया जाता है। इसकी कमी से बेरी-बेरी का रोग हो जाता है तथा ये स्नायुतंत्र में रोग की छूत फैलने से बचाता है।

विटामिन सी की कमी से स्कर्वी, जोड़ों का अकड़ना, दाँतों के रोग तथा हड्डियों के दुर्बल होने की बीमारी हो जाती है। संतरे, नींबू, टमाटर तथा बन्द गोभी इत्यादि में विटामिन सी बड़ी मात्रा में पाया जाता है।

विटामिन डी नवजात बच्चों की हड्डियों तथा दाँतों के निकास के लिये बहुत आवश्यक है। ये मछली के तेल, जिगर, अण्डे इत्यादि में मिलता है। धूप से भी विटामिन डी प्राप्त होता है। शरीर को स्वस्थ रखने के लिए विटामिन युक्त संतुलित भोजन अति आवश्यक है।

****

प्र० : हीरा क्या होता है तथा इसका मूल्य इतना अधिक क्यों होता है ?
सुखविन्दर अरोड़ा—पंजाब

उ० : हीरा मनुष्य की जानकारी का सबसे ठोस तत्व है। वैज्ञानिकों का मत है कि १००,०००,००० साल पहले पृथ्वी के नीचे एक तरल उष्ण चट्टान थी। यह समय पृथ्वी के ठंडा होने का आरम्भ था, इसलिए इस चट्टान में अत्यधिक दबाव और गर्मी के कारण रासायनिक प्रतिक्रियायें हुई। जिनके फल-स्वरूप रासायनिक सम्मिश्रण बने जिनसे एक बहुत अधिक क्रिस्टल बना हुआ कार्बन था जिसे हम हीरा कहते हैं।

हीरे में दो बहुत अद्भुत विशेषतायें हैं। एक तो उसकी कठोरता तथा दूसरी उसकी चमक। हीरे बहुत कम पाये जाते हैं ये ही उनके मूल्यवान होने का एक कारण है परन्तु कम पाया जाना ही काफी नहीं है। हीरे की चाहत भी बहुत है। हीरे के प्रकाश को प्रतिबिम्बित करने की शक्ति और किसी तत्व में नहीं है। ये सुन्दरता की एक वस्तु है जो हजारों वर्षों तक रहती है। इनको काटना भी बहुत ही कठिन काम है। हीरा केवल हीरे से ही काटा जा सकता है। सुन्दर कटे हुए हीरों के ५८ पहलू तक बनाये जाते हैं। गुलाबी, नीले तथा दागरहित सफेद हीरे अति सुन्दर माने जाते हैं। हीरों के आभूषण बनाये जाते हैं। उद्योग में भी हीरों का बहुत महत्वपूर्ण स्थान है। संसार में पाये जाने वाले हीरों का ३/४ भाग औद्योगिक कार्यों में उपयोग किया जाता है। हीरे की रेत धार बनाने वाले पहियों पर लगाई जाती है जिससे कई प्रकार के औजार तथा लेन्स इत्यादि बनाये जाते हैं।

****

प्र० : गिरगिट अपना रंग कैसे बदलता है ?
—संजय कल्ला, मारवाड़

उ० : गिरगिट के बारे में यह सोचा जाता है कि अपने प्रतिवेशी स्थान के रंग का हो जाता है। परन्तु विचित्र बात ये है कि गिरगिट अपने आस-पास के स्थान रंगों पर बिल्कुल ध्यान नहीं देता। इसी कारण उसके रंग बदलने में आसपास के रंग का कोई महत्व नहीं होता।

गिरगिट की चमड़ी पारदर्शी होती है। इस चमड़ी के नीचे लाल, पीले और काले रंगों के कोषाणुओं की तहें होती हैं। जब ये कोषाणु सिकुड़ते या फैलते हैं तब हमें गिर-गिट के भिन्न रंग दिखाई देते हैं।

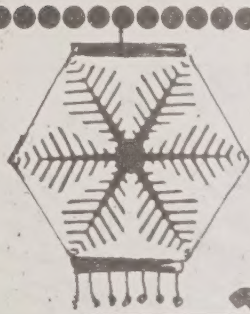
ये कोषाणु भिन्न-भिन्न कारणों से फैलते और सिकुड़ते हैं। जब गिरगिट क्रोधित या भयभीत होता है, तो उसके मस्तिष्क के आदेश से उसका रंग गहरा हो जाता है। सूरज के प्रकाश का भी रंग पर प्रभाव पड़ता है। प्रकाश की गर्मी से रंग काला हो जाता है तथा सर्दी होने पर रंग बहुत हल्का हो जाता है। अंधेरे में गिरगिट हरे रंग का हो जाता है।

गिरगिट रंग बदल कर सांप, चील तथा और पक्षी शत्रुओं से अपना बचाव कर लेता है।

क्यों और कैसे ?
दीवाना साप्ताहिक
८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग,
नई दिल्ली-११०००२

दीवाली बधाई कार्ड रंगीन

इन कार्डों को काट कर किसी गत्ते पर चिपका लें और मन-चाहा रंग भरें, पीछे की तरफ नाम और पता लिख कर अपने दोस्तों के भजें और दीवाली का मजा लें।



दीवाली की शुभकामनायें



आपके घर लक्ष्मी आये



दीवाली मुबारक !



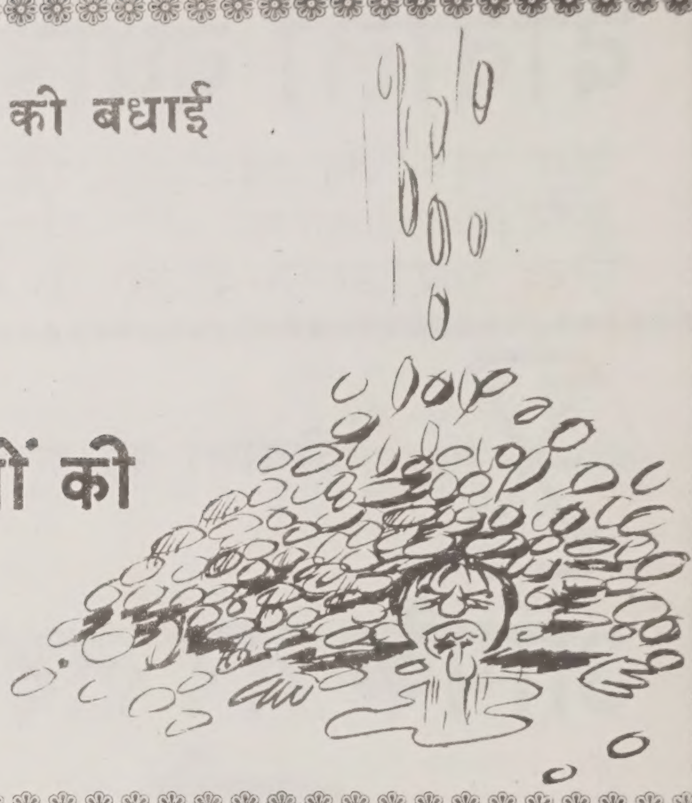
आपके घर घी के दीये जलें



(और थोड़ा-सा तड़के के लिये बच जाये)

दीवाली की बधाई

आपके घर रुपये पैसों की वर्षा हो !



चना कुरमुरा

चिरंजीतराय अपने सम्बन्धी की खोज खबर लेने अस्पताल पहुंचे । वहाँ बरामदे में उन्हें डाक्टर मिल गया, 'डाक्टर साहब, दयामू का क्या हाल है ?'

डाक्टर ने ताली बजाई । फौरन एक नर्स आई । आदेश पाकर वह कमरे में हाल पूछने गई । तभी एक भयभीत चीख सुनाई दी और नर्स कमरे से भागी चली आई ।

डाक्टर मुस्कराकर बोला, 'वह बिल्कुल ठीक है, अब आप घर ले जा सकते हैं ।'

☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆

किशनलाल के सिर में दर्द हुआ और इसी में वह चल बसा । इलाज करने वाले डाक्टर ने उसकी पत्नी को सहानुभूति दिखाई, 'यह बड़ी अजीब बात हुई, श्रीमती किशनलाल । मेरे विचार से यह सौ साल में एक बार होता होगा कि कोई इस सादी बीमारी में मर जाय ।'

विधवा ने बड़े गर्व से कहा, 'मैं जानती थी कि मेरे पति असाधारण मनुष्य हैं ।'

कलाकार

अधिकतर लोग जो अपने आपको चित्रकार कहते हैं, दरअसल चित्र-विक्रेता हैं; फर्क सिर्फ इतना है कि वे चित्र खुद उन्हीं के बनाए होते हैं । **सेम्यूयल बटलर**

☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆

जैसे-जैसे धर्म का प्रभाव घटता है, कला का सामाजिक महत्व बढ़ता जाता है; हमें सावधानी बरतनी चाहिए कि हम अच्छे धर्म के बदले खराब कला को न अपनावें ।

एल्डस हक्सले

☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆

यह चतुरतापूर्ण तो है, लेकिन क्या यह कला है ? **रुडयार्ड किपलिंग**

☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆

सलाद में लहसुन का जो स्थान है वही कला में पागलपन का है ।

आगस्टस सेंट गार्डिंग्स

☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆

तर्क-कुतर्क

वाद-विवाद इतना गर्म हो गया कि पड़ौसन्न को दमकल बुलाना पड़ा ।

निकोलस बेंटले

☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆

आप अपनी आवाज तेज करते हैं उस समय जब आपको अपने तर्क मजबूत क चाहिए । **सेम्यूअल जान्**

☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆

जो अवश्यभावी है उससे तर्क करने कोई लाभ नहीं; पूर्वी हवा के साथ एक तर्क है, कि आप अपना ओवरकोट पहन **जेम्स रसेल लो**



पृष्ठ 30 से आगे

नकली दुल्हन को असली दुल्हन समझती रही। योगेन्द्र की माँ बोली।

'परायी औरत का तो घर में पता चल ही जाता है, माँ ?' बलजीत ने उसे टोका।

'मैं उसे कैसे पहचानती ?'

कपड़ों से।

'कपड़ों से ही तो वह मुझे सविता लगती रही।'

'आवाज से भी नहीं पहचाना ?'

'आवाज भी उसकी सविता की सी थी। हाँ, चार दिन पहले उसकी आवाज सुनकर थोड़ा शक तो हुआ था और मैंने पूछा भी था; वह कहने लगी कि उसे जुकाम है। मैंने समझा कि जुकाम के कारण आवाज बदल गई होगी।'

इन्स्पेक्टर बोला, 'जरूर वह कोई नकली सविता थी। तभी तो वह मिस्टर योगेन्द्र के घर लौटने से आधा घंटा पहले खिसक गई !'

'मिस्टर योगेन्द्र !' बलजीत ने पुकारा।

'जी ?'

'मिर्जापुर जाने से पहले क्या आप बता कर गए थे कि किस दिन घर लौटेंगे ?'

'जी हाँ; मैं सविता को बता गया था कि किस दिन और किस गाड़ी से लौटूंगा।'

बलजीत बोला, 'इन्स्पेक्टर साहब ! इसका मतलब यह है कि सविता की हत्या करने के लिए उसका चार दिन पहले अपहरण किया गया। उसी की जबानी कातिलों को मालूम हुआ कि मिस्टर योगेन्द्र किस दिन और किस समय घर लौटेंगे। दुश्मन ने सोच-समझ कर नकली दुल्हन इनके घर भेज दी, ताकि देर तक इस बात का किसी को पता न चल सके कि सविता का अपहरण हो चुका है।'

अब योगेन्द्र ने पूछा, 'सविता का अपहरण करके उसकी हत्या क्यों की गई ?'

'यही रहस्य जानने के लिए तो हम दौड़-धूप कर रहे हैं।' बलजीत ने कहा, 'आप हमें यह बताइये कि सविता ने आपके सामने कभी ऐसी चर्चा तो नहीं की कि उसे किसी से डर है ?'

'नहीं।'

'अच्छा यह बताइये कि आपकी पत्नी किसी पूर्णिमा को जानती थी ?'

'नहीं। अगर जानती थी तो मुझे उसने कभी नहीं बताया।'

'धन्यवाद ! अभी [illegible] दिन शाहजहाँपुर में ही रह[illegible] [illegible]लजीत ने

उठते हुए कहा।

वापसी में इन्स्पेक्टर बोला, 'बलजीत बाबू ! अभी हम किसी ठीक रास्ते पर नहीं पहुंच पाए।'

'यही तो दुश्मन की चाल में विशेषता है। वह गहरी पॉलिसी पर चल रहा है।'

चौक में पहुंच कर बलजीत जीप से उतर गया। वह अपने होटल में पहुंच कर देर तक मौजूदा केस पर विचार करता रहा।

शाम को पौने पाँच बजे का समय था।

उस्मानबाग की एक नयी इमारत की निचली मंजिल पर दरवाजे के ऊपर बोर्ड लगा था जिस पर लिखा था—'मुगल कारपेट्स प्राइवेट लिमिटेड'।

दरवाजे के पीछे आलीशान दफ्तर था। शीशे के टॉप वाली एक बढ़िया मेज के पीछे घूमने वाली कुर्सी थी। उस कुर्सी में जो नौजवान बैठा, उसने भूरे रंग का सूट पहन रखा था। उसकी नाक नुकीली थी।

मेज पर एक अलबम खुली पड़ी थी। उस अलबम में आर्ट पेपर पर सात रंगों में डिजाइनदार गलीचे दिखाए गए थे—मिर्जापुरी गलीचे। अन्त में गलीचे गोल करके दिखाए गए थे।

नौजवान के सामने लम्बे कद की एक सुन्दर लड़की बैठी थी। उसकी आयु बाइस-तेइस वर्ष के लगभग थी। वह पेंसिल और नोटबुक लिये हुए थी।

नौजवान अभी विचार मग्न था।

'मिस्टर कौल ! मैं चार-पांच दिनों से देख रही हूं कि आप डिक्टेशन लिखाते-लिखाते गुम से हो जाते हैं। कहीं आपका किसी से रोमांस तो....'

'नहीं-नहीं, उसका अभी जन्म नहीं हुआ।' रवीन्द्र कौल ने कहा, 'चार-पांच दिन बाद ही मुझे मालूम होगा कि मेरे भाग्य में क्या है ?'

'आपने अपनी मंगेतर से कभी हमें मिलाया तो है नहीं। उसका नाम तक नहीं बताया कि वह खुशनसीब कौन है ?'

'जब हमारा रोमांस ही चलते-चलते रुक गया तो उसे यहाँ लाकर भी क्या करता और नाम बताने से क्या हो जाता ! हाँ, अगर चार दिन बाद मेरी मर्जी का फैसला हुआ तो मैं उससे तुम्हें जरूर मिलाऊंगा। मिस सीमा ! तब तुम्हें मिलवाने से पहले उसका नाम भी [illegible] 'तुम अब जाओ और [illegible]

के मूड में नहीं हूं।

'ये चिट्ठियां क्या ढेर नहीं लग जाएंगी ?'

'नहीं; कल सबका जवाब लिखवा दूंगा।'

'विश यू गुड लक !' सीमा ने उठते हुए कहा। वह रवीन्द्र कौल की सेक्रेटरी थी।

अपने कमरे में आकर उसने टाइपराइटर पर कवर चढ़ाया। पेंसिल और नोट-बुक दराज में रख दीं। हैंडबैग खोल कर पफ अपने गालों पर रगड़ा। लिपस्टिक से होंठों पर रंग जमाया। दर्पण में चेहरा देख कर वह मुस्करा उठी। हैंडबैग बन्द करके वह सदर दरवाजे की ओर चल दी।

रवीन्द्र कौल के दफ्तर के आगे से जाते हुए वह इठला कर रुकी और बोली, 'आप ज्यादा उदास हैं।'

'क्या मैं आपके दुःख में कोई हाथ बंटा सकती हूं।'

'शुक्रिया ! कल मिलेंगे।'

'नमस्ते !' सीमा आगे बढ़ गई।

रवीन्द्र कौल फिर से अपने विचारों में गया। किसी तरंग में आकर घंटी का बटन दबा दिया।

चपरासी दरवाजे में आ खड़ा हुआ।

'कुन्दन ! तुम भी छुट्टी करो। दफ्तर मैं खुद बन्द कर लूंगा।'

'अच्छा सरकार !'

कुछ मिनट बाद चपरासी भी अपना झोला लेकर चला गया।

रवीन्द्र कौल ने मेज की दराज में से एक फोटो निकाली। कुछ पल वह उसे नशीली आँखों से देखता रहा। फिर उसने फोटो को चूम लिया।

ठीक इसी समय ऑफिस के आगे कदमों की आहट उभरी। एक अधेड़ आदमी दरवाजे में आ खड़ा हुआ। उसकी दाढ़ी नुकीली थी। मूंछें फूली हुई थीं। हाथ में भारी बैग था। उस पर लिखा था—ऑल राउंड एक्सपोर्टर्स, लखनऊ।

'गुड ईवनिंग !' आगन्तुक बोला, 'बाहर दरवाजे पर कोई नहीं था, इसलिए सीधा अन्दर आ गया। इसके लिए क्षमा चाहता हूं।

'कोई बात नहीं। आइये, बैठिये !' रवीन्द्र ने सामने की कुर्सी की ओर इशारा किया।

'मैं ऑल राउंड एक्सपोर्टर्स लखनऊ का चीफ नुमायन्दा हूं। हम गलीचे निर्यात करते हैं। इस बार हमें कुवैत से भारी आर्डर मिला [illegible] फर्म की मशहूरी दूर-दूर तक है।

मुझे फर्म की ओर से आपके पास भेजा गया है।'

'कितने गलीचों का आर्डर है ?'

'दो हजार का। गलीचे डिजाइनदार और खास साइज के हों।'

'कब तक माल भेजना है ?'

'दो महीनों में तैयार मिलने चाहियें।'

'हूं।'

'आप हमें यह भी बताइये कि कमीशन क्या देंगे ?' आगन्तुक ने अपना बैग कुर्सी के पास रख दिया और बैठ गया।

'जब तक मैं डिजाइन और साइज न जान लूं, तब तक कुछ नहीं कह सकता।' रविन्द्र ने कहा।

'वह मैं आपको दिखा देता हूं।' यह कह कर अधेड़ आदमी ने झुक कर बैग खोला और उसमें से कुछ निकाल कर तेजी से उठ खड़ा हुआ।

रवीन्द्र चीखना चाहते हुए भी चीख न सका।

आगन्तुक के हाथ में डिजाइन नहीं, बल्कि छुरी थी। वह फुर्तीला भी बहुत निकला।

रविन्द्र कौल को वह छुरी अपने गले में अड़ी अनुभव हुई। उसका सिर कुर्सी की पीठ से जा लगा। उसकी गर्दन से खून का फव्वारा छूट पड़ा। खून के कुछ छींटे मेज पर भी पड़ गए थे।

हमलावर ने खून के छींटों से बचने के लिए पीछे की ओर छलांग लगा दी थी।

जब खून के छींटे उड़ने बन्द हो गए और रवीन्द्र के गले से खून रिसने लगा तो उसने मेज पर पड़ी फोटो उठा कर कोट पर पोंछी। वह फोटो उसने बैग में फेंक दी। अब वह मेज के बायीं ओर गया। उसने खुली दराज में झांका। उसमें लाल फीते से बंधे आर्डर्स के सब्ज लिफाफे थे। उन्हें उठा कर वह लौटा और बैग में फेंक दिया। बैग उठा कर वह पीछे देखे बिना दरवाजे की ओर बढ़ा।

रवीन्द्र कौल की सेक्रेटरी मिस सीमा 'मुगल कारपेट्स कम्पनी' से निकल कर देर तक बस स्टैंड पर खड़ी रही। बस आई तो वह इतनी भरी हुई थी कि स्टैंड पर खड़ी न हुई।

एकाएक समय देखने को सीमा ने अपना बायां बाजू उठा कर कलाई की तरफ देखा। कलाई सूनी थी। उसने याद किया तो चौंक गई। अपनी घड़ी वह दफ्तर में अपनी मेज की खुली दराज में छोड़ आई थी। उसे फौरन हथिया लेना जरूरी था। चपरासी या चौकीदार कितने भी ईमानदार हों, खुले में पड़ी चीज देख कर लालच जाग ही उठता है।

यह सोच कर सीमा जल्दी कदम उठाने लगी। इस बीच बस के इन्तजार में वह लगभग पन्द्रह-बीस मिनट गंवा चुकी थी।

'मुगल कारपेट्स कम्पनी' का सदर दरवाजा खुला देख कर सीमा ने इत्मीनान की सांस ली। वह समझ गई कि रवीन्द्र कौल अभी अपने दफ्तर में था। दरवाजे में पहुंच कर सीमा मुस्कराई।

जब वह रवीन्द्र कौल के आफिस के आगे से निकली तो हाथ में थामा हैंडबैग उसके मुंह तक उठ आया। चीख दबाने की कोशिश बेकार गई। वह अपने को सम्भाल रही थी, फिर भी उसके घुटने कांपे जा रहे थे। उसके होंठों से हूक-सी निकली, कौल साहब !...मिस्टर कौल ! किसने आपकी यह हालत बना दी, कौल साहब ?'

क्रमशः